वे॰ गा॰
५२
43

ग नापर किंकनी छबिछाई ॥ बनमाल मुक्तमाल के
ठवनी कौस्तुभ मणि पीताम्बर चटक नामै दामिनि
दुति पाई ॥ बाजूबंद अंगुरि मुदरि नगन को अति ब
मनकार अरुण अधर मधुर स्वर मुरली बजाई ॥ कम
ल नयन विमल कांति कुंडल छबि बिंब होत आनन्द
सो सुख मानो रघोरी मुसकाई ॥ कुंचर वारी अलक

झलक कीयें चंदन खौर श्रौर मोर मुकुट सीस धरें बनी
सुंदर ताई ॥ कहैं भगवान हितराम राय प्रभुको निस
दि श्रीगोपाल श्रीगोपाल रसना रटलाई ॥ रागिनी
बंगाली ताल ४ ॥ श्रीवल्लभ सुजस संतनतिन
उठ गाऊं ॥ इस्थाई ॥ मन क्रम वचन छिन एक
न विसराऊं ॥ इअंतरा ॥ पुरुषोत्तम अवतार सुकृत

फल फलित जगत बंदन श्री विट्ठलेश कुलराऊ ॥ पर
सि पद कमल रज निरखि सौंदर्य निधि प्रेम पुलकित
कलुष कोटि कनसाऊ ॥ श्री गिरि धरन देवपति मान
मर्दन करन पोष रतक सुखद व्रजजन सुनाऊ ॥ श्री गो
विंद ग्वाल संगाय ले चलत बन निरखि नैननि सिराऊ॰
श्री बाल कृस्न सदा सहज बालक दसा कमल लोचन सो

हरषित रुचि बढाऊं ॥ भक्ति मारग सुदृढ करन गु
ण रासि व्रज मंगल श्री गोकुल नायही लडाऊं ॥ श्री
रघुनाथ धर्म धुरंधर सोभा सिंधु रूप लहरिन इव हरि
वढाऊं ॥ पतित उद्धरन महाराज श्री जदुनाथ विशद
प्रेमज हाथ सिरसि परसाऊं ॥ श्री घन श्याम अभिराम
रूप बाधा सानी आसा लागि रसना वाधि करटाऊं ॥

बे.रा.
४५
45

चरनभैज दास परेव द्वार शरणापन करे सकल जगतको
चरणाम्रत मोर उरि पाऊ ॥ रागिनी बेंगाली ता
ल ३ ॥ भजि श्री विठ्ठल चरण सरोजे ॥ इन्द्रस्था
ई ॥ नारवमणि शोधित दमिन मनोजे ॥ इंद्यतरा
इछसि यदि मनने सुखसारे ॥ भजसिन किमि
नि विषय धनभारे ॥ यदि वांछसि हरिभक्ति सर

न्ते ॥ ऊरुचपले मारणागनयन्ते ॥ प्राणसहडलि
भ नर देहे ॥ परिहर सकल निगम भेदेहे ॥ मान
य हृदय मयो दिन वचने ॥ नदया सिनोवेदनि श
यपवने ॥ वक्षपदे भावय भवजलधिं ॥ श्वेनसमे
भवायिन ववधिं ॥ नाथ नवाह मिनी गणा गावे ॥
हृदय सनत मिसमयिभावे ॥ नव गणा गणा कथि

बे.रा.
४६
46

ता म्हतगाथै ॥ प्राप्तीमिदं दिशा नव रत्ननाथै ॥ ॥
रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ इति संग्राम वीर रस माते
इनपस्याई ॥ होहरि म्हर शिरोमणि अजहूं नहिन संभार
सकल अंग नाते ॥ इंसंतवा ॥ औरे वरन भये पलोचन
अपने अपने सहज विनाते ॥ मानहु भीरपरी औधन
की नाते भये क्रोध अति राते ॥ परि मल लब्ध जहां

अलि बैठत उडि उडि उडि नहि सकत नहींते ॥ जन
मन मध्य सर वागे फाटो फोकहोत सब वाहरि ज्या
ने ॥ बैठि जात अल सात उनींदे क्रम क्रम क्रम करि
उठत नहींते ॥ मन मरख्या कटाछ नाट सलेकाढ
त नाहि बुझ्यो हियराने ॥ ज्या मगात चूमत जो बा
यल शोभा अति भई सुभट कलाने ॥ सूरदास स्वा

बे॰रा॰ मी रणजीत प्रव सजचन यों हौ नमकाते ॥ रागिनी
४७ बेगाली ताल ४ ॥ जागिये गोपाल लाल आनंद
47 निधि नंदलाल जसमति कहै वार वार भोर भयो प्यारे
रत्नसाई ॥ नयन कमल से विसाल प्रीति वापिका म
राल वदन ललित चंदनतै ऊपर कोटि वारिडारे ॥
अरुणनरा ॥ उगत अरुण विगत सर्वरीस संकि किरनि

हीन दीन हीय मलिन छीन इति सम्हूह मोरे ॥ मनङ्ग
ज्ञान घन प्रकास कीने सब भव विलास त्रास नास ति
मिर लोप तरनि तेज जोरे ॥ बोलत खग मुखर निकर
मधुकर झौरे प्रवीन मनङ्ग परम प्राण जीवन धन मेरे
नृप मोरे ॥ मनो वेद वंदी मुनि सुत हेद मागाथ गान वि
रद बदत जै जै जै जैत कैट भोरे ॥ विगसित कमला वली

बे·रा ४८ 48

बल अफंद बचरीट गंजन कल भुनि न्यागि केजन्यारे ॥ म
नो विराग पाय सकल लोक कूप गृह विहाय प्रेम मन फि
रत भ्रमत गुनन गण निहारे ॥ सुनत वचन प्रियरसाल
जागे अतिसै दयाल भागे जेजाल विपुल डाव कदेव
टारे ॥ न्यागे भ्रम केद देह निरखि के न्याखार विह
सूरदास अति अनंद मेटे मद भारे ॥ ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी ॥ मंगल रूप
यशोदानंद ॥ इत्यस्थाई ॥ मंगल मुकुट कान मणि
कुंडल मंगल तिलक विराजचंद ॥ इत्यंतरा ॥ मंगल
भूषन सब अंग सोहत मंगल मूरत आनंद कंद ॥ मंग
ल लकुट कांख मे चांपे मंगल मुरलि बजावत मंद ॥
मंगल चाल मनोहर मंगल दरसन होत मिट्यो दुखदंद

बे.बा
४९
49

मंगलं ब्रज पति नाम सबन को मंगल जस गावन
श्रुति छेद ॥ रागिनी बंगाली ताल षट्पदी
सखी नीकी लोनी रूप मोरही दिखाइये ॥ इन
प्याई ॥ निसि के उनीदे नैन तोतरात मीठे बैन भाव
न होजी के मेरे सावरी बधाइये ॥ इन्ये नरा ॥ सक
ल रूप करन त्रिविध तापहरन उनको तिमिर वा

ध्यौ नरतन साइये ॥ हारे दाढे ग्वाल बाल करउ क
लेउ लाल मिसिरी रोटी छोटी मोटी माखन सो खाइ
ये ॥ नेनिक सो मेरो कन्हैया बारि फेरि डारी मैया बे
नी नो गुहे वातय गहरून लाइये ॥ परमानंद जन
जननि मोदित मन फूली फूली फूलोउर ॲगान स
माइये ॥ रागिनी बंगाली ताल २ षट्पदी ॥

वे॰ गा॰
५॰
50

जागिये गोपाल लाल जननी वलि जाई ॥ रमस्याई ॥
उठौ तात भयो प्रात रजनी को तिमर गयो प्रगटे सव ग्वा
ल बाल मोहन कन्हाई ॥ रमेनरा ॥ उठो मेरे आनंदकंद
गगन चंद मंद मंद प्रगटो प्रकाश भोन कमलनि सुख
दाई ॥ सिंगी मद भरत वेन नम विना न छुटे धेन उठौ
लाल नजो सेज सुंदर वर गई ॥ माखनै पट दूर कियो

जसुदा कौं दास दियो अरु दधि सब भांति लियो विवि

धि रस मिठाई ॥ जेंवत दोउ राम श्याम सकल मंगल

गुण निधान थार मैं तजु जूठ रही सो मान दास पाई ॥

रागिनी वेंगाली ताल १ षट्पदी ॥ प्रान नाथ प्रान

गयो जागो वलि जाऊं ॥ इस्थाई ॥ सौना केर गोफ

न सबैन मैं गयाऊं ॥ इन्तरा ॥ उगत सूरजजोति

बे॰ रा॰
५८

भई ऊलहिहीवनाऊं ॥ पाय बोधीं बेहूह प्रह चालि वो
सिखाऊं ॥ सूरदास मदन मोहन गुण तिहारे गाऊं ॥
हरषि निरषि छबिके उपर बलि बलि बलि जाऊं ॥
रागिनी बेंगाली ताल १ षटूपदी ॥ रैन जागी
पिय संग रंग भीनी ॥ अन्तरा ॥ प्रफलित नव
केजनैंन खंजरीट मीन मैंन बिथुरि रहे छबन कच वद

न ओप कीनी ॥ अन्यतरा ॥ आनव आलस जंभान अ
ल किन अनि पान खान मद माते नन मधि नवही सिथि
ल भई बेनी ॥ मांगमें टरि मक्का हल अलक मेरा अरु
झि रही उरगन सत फनि मानों केतु किनजि दीनी ॥
विकसत जैां चंपकली भेर भए भवन चली लट पटात
प्रेम बस गजगति गति लीन्ही ॥ आरति को करत नास

बे·रा· गिरधर छवि भाव की रासि सूरदास स्वामिनि गुन गने
५२ न जात चीन्हीं ॥ रागिनी बंगाली ताल ८ षट्पदी
भोर अंग अंग शोभा श्याम के भली ॥ ध्रुवस्थाई ॥ म
नहु विगसित विचित्र नील कमल की कली ॥ प्रिया
उरसि लगन राग सरस झुरिन छवि पराग पवन पर
सि मंदले सुगंध कोवली ॥ करि प्रवेश प्राण द्वार ह

रति जुवति चितसार मरम वेधि समर वान काम ने व
ली ॥ पलटि वसन सुखनिधान मन मधुप करन
गान स्रवन सबै सुजस सुनो श्रवन दे अली ॥ गोपा
ल दास मदन मोहन कुंज भवन बलित रंग सदित ब्र
वनि भावती सुमानि केरली ॥ इतिश्राभोगः ॥
रागिनी बंगाली ताल ॥ ३ ॥ षट्पदी ॥

वे॰ रा॰
५३
53

नाहि डुरत नयना रतनारे ॥ स्थाई ॥ जानु वेधक
सुमन बिसाल पर सुंदर श्याम सिली मुखवनारे ॥ अं
तरा ॥ रही जुअलक कुटिल कुंडल परमोतन चितवन
चिते बिसारे ॥ सिथिल भोंह धनु गहे मदन शर रहे
कोकनद बान बिसारे ॥ मुंदेही आवत है ये लोचन
पलक आतुर उघरतन उघारे ॥ सूरदास प्रभु सोई धों

ह॰ ५

कहो ऐसी को वनिता जासों रति रन हारे ॥ रागिनी वे
गाली ताल ३ षट्पदी ॥ आवत लाल गोवर्द्धनधारी
रत्यस्याई ॥ अलस नयन सरस रस रंगित प्रिया प्रेम
नूतन अनुहारी ॥ रत्यंतरा ॥ विलुलित माल मरग
जी उर पर स्रवत समर की लगी पराग ॥ डेवत श्या
म अधर रस गावत स्रवति भाव स्रवे भैरव राग ॥ पल

बे॰रा॰ रि परे पटनील सखी के रसमें जीतन मदन नडागा ॥
५४ वृंदावन वीथिनि अवलोकत सूरदास लोचन बड
54 भागा ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ षट्पदी ॥
ऐसेही धरौ री दधि बिना मथन किये देहुजसुमति
नेकु अपनी रई ॥ इनस्थाई ॥ अपनइं छूटि हारी
तैसी निशि अंधियारी पाउन भवन माझ कहूं धो

गई ॥ रत्नावती ॥ कहुन जिय सहाई याहीतें आनन्द
आई सोनी के लालच जीय वट परी भई ॥ दिना चारि
करौ काज वाको नेदज्जूको राज जोलौं वहुरिहौं ल्याऊं
नई ॥ वनभंज दास रानी मेरी अति चोप जानी है प्रस
न्न मणि महिमा आनि दई ॥ भोरही देउं असीस वार
जिनिवि सोसीस निहारे गिरिधर कीहौं वलि वलि गई.

बे॰ रा॰ रागिनी बेगाली ताल झंप षट्पदी ॥ श्रीनाथजी
५५ 55 को ध्यान मेरे निशदिनारी माई ॥ रूपस्याई ॥ माधुरी
मूरति मोहनी सूरति चित लियो चुराई ॥ रूपेनरा
लाल पाग लटकि भाल चिबुक बेसर कंठमाल करन
फूल मंद हास लोचन सुखदाई ॥ मोर पंख सीस धरें
मोतिन के हार गरे बाजू बंद पहुंचिन कर मुद्रिका सुहा

ई ॥ कुंद वेदिका जेहरि नूपुर बिछिया खदेस पेग ठे

ग देखत उरआनंद न समाई ॥ मुरली अधर धरे श्याम

ठाढे ब्रज जुवति माह सम खरन तान गान गोवर्द्धन राई॰

निरखि रूप अति अनूप जाके सुर नर विमान वल्लभ

पद किंकर दामोदर बलि जाई ॥ रागिनी बंगाली ता

ल षट्पदी ॥ बदेरी नाथ हाहा मोहि दरशदी

वे॰रा
५६
56

जे ॥ अस्थाई ॥ दीप जिनि मन धरो सहज करुणा
करो विगर साजन मोहि दास करि लीजे ॥ अंतरा ॥
दुखिन छिन होत जिय वदन देखे विना रैन दिन नय
न विन कैसे जीजे ॥ कासो कहिये हिये राखिये को
न विधि रहत नही क्योंहू करि देह छीजे ॥ लेत न
उसास उर कैसे हो समाइ नही सोच दृग भरि न पीजे ॥

वदन लावति भ्रमरन रसिक प्रीतम सु(ख)दपान विन्न

सकल तन कैसे भीजे ॥ रागिनी बंगाली ताल ॥

चर्चरी ॥ नेकु वोलो नाथ भ्रमरन रसवैन ॥ रूपसुधा

है ॥ और न सुहाइ परी करनिहें होइ निन चिन न

लागत कहूं नेकु नही वैन ॥ दीनजन मन मनोर

थ के पूरन करन और निडं लोक में देखियत हैन ॥

वे·रा· जे मिलन आइते लन सरव सुभाव करि कहो कैसे हरि
५८ मन रहे चेन ॥ अरथ वन रावरोहै तिहारे हाथ नाथ क
हो और समरथहै कोदेन ॥ रसिक पिया जिनिकरो क
ठिन मनदीन पर परसिके नजन यह लषन तो छदेन
रागिनी वेगाली ताल ३ षट्पदी ॥ जैजैजै श्री
वलभ नंद ॥ अनुस्थाई ॥ कोटि कला हेदावन वेद ॥

इसंतरा ॥ निगम विचारैन लहै पार ॥ सोठाकुर घका
के दार ॥ लीला करि गिरधर्यो हाथ ॥ छीत स्वामि
श्री विठल नाथ ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी
मदन गोपाल हमारे राम ॥ इन्यस्याई ॥ धनुषबान ध
रि बिमल बेन कर पीत बसन अरु नैन घनश्याम ॥ इसं
तरा ॥ अपनो भुज जिन जल निधि बांध्यो रासनवाय

वे·रा· ५८ 58

कोटिक काम ॥ दस सिर हनि सब असुर संघारे गोवर्द्ध
न धार्यो कर वाम ॥ नव रघुवर अब जदुवर नागर ली
ला निधि विमल वहु नाम ॥ परमानंद प्रभु भेद रहित
हरि निज जन मिलि गावत गुण ग्राम ॥ रागिनी
बंगाली ताल ३ षट्पदी ॥ नीको मन ला
ग्यो गिरि धरगावै ॥ इति अस्थाई ॥ ततथेई ततथे

ई भैरव रागमिलि मुरलिका बजावै ॥ इत्येनरा ॥
नेचत न्रप ब्रषभान नंदिनी श्रीधर मनिरंग उपजा
वे ॥ नूपुर क्वणित म्रखर मणि कंकण सखी न्रत
म्रखरासि बजावै ॥ स्वरन देत मधमन मधुप क्षल प
क तालो सबके मन भावै ॥ सरसि सिंधु प्यारी पिय
पर रज फूलदास न्योछावर पावै ॥ रागिनी बंगाली

वे.रा.
५५
59

ताल ८ ॥ जागिये ब्रजराज कुंवर कमल फूले ॥
इत्यास्थाई ॥ कुमद ब्रंद सकुचि भये भ्रंगलता भूले ॥
इत्यंतरा ॥ तमचुर खग रोर सुनहु बोलत वनराई ॥
रांभति गौखीर देन वछरा हित धाई ॥ विधुमली
न रवि प्रकास गावत ब्रजनारी ॥ सूर स्याम प्रा
त उठे अंबुज करधारी ॥ इतिआभोगः ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल २ ॥ अष्टपदी ॥ भोरनि कुंज
भवनतैं भामिनि ॥ इतस्याई ॥ आवनिहै लटकनि ग
जगामिन ॥ इअंतरा ॥ अनक सुगंध सगावगी छुटी॰
निसि के उनींदे नैन बीर बहूटी ॥ पलटिन बसन रसन
मणि भूषण ॥ सोभा अंग अंग जिन दूषण ॥ राणा
निधान वृषभान दुलारी ॥ दास गोपाल लालजू की प्यारी

वं॰रा॰ ८॰

60

रागिनी वंगाली ताल २ अष्टपदी ॥ अरुण नैन
राजत श्रम भोरे ॥ इनि अलसाई ॥ अति साव सवत कि
ये ललना संग जागत समद मन्मथ सर जोरे ॥ अंजनरा
गति उनींदे अलसात मराल गति गोलक चपल रहत
कछु थोरे ॥ मनहुं कमल के कोसते पीनस छंफन
रहत छापि निउ दल दोरे ॥ सजल कोप अति मैं ज्व सो

भियत संगाम छविनारे पर छोरे ॥ मन भारते भंवर
मीन शिशु जान नवल चितवन चितचोरे ॥ वरनि न
जाइ कहांलो वरनों प्रेम जलद वे लावल छोरे ॥ सूर
दाससो कोन प्रिया जिनि हरिके सकल अंग वल तोरे
रागिनी वंगाली ताल ध्रुपदी ॥ सुमिरो
नर नागर वर सुंदर गोपाल लाल ॥ इतिध्रुस्याई ॥

वे·ग· सबहीं डरे मिटि जैहैं चितवत लोचन विसाल भ्रुव-
६१
भंगना ॥ अलकन की झलकन लखि पलक
निगति भूलि जात भ्रू विलास मंदहास रदनहास
कदन अति रसाल ॥ निंदत रवि कुंडल छवि गंड
मुकर झलमलात पिक्क शुक्क कंत वंस रंड वि
मल विंदु भाल ॥ अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग

रंग बिमर मदगायंद होत देखत लटकीली चाल ॥ र
तन रसन पीत वसन चारु हार वर सृंगार तुलसी रवि
कुसुम खचित पीत उरन बीन माल ॥ ब्रजनरेस बे
महीप वृंदावन वर महीप श्री वृषभान मान्य पात्र मह
ज दीन जन दयाल ॥ रसिक रूप रूप रासि गुन निधा
न जान राय गदा धर प्रभु जुवती जन मनि मान समन

बे·रा मशाल ॥ रागिनी बेगाली ताल ३ अष्टपदी ॥

६२ दीनो दरस सपने में आइ ॥ अन्तस्थाई ॥ छिन एक

62 सुख उपज्यो मेरे मन गये कहूं हरि बिरह बढाइ ॥

अंतरा ॥ जाइ पाइ परतिहौं मेरे कोउ है करि लावै

न बुलाइ ॥ अब न परत मोपै न रह्यो छिन बिन भेटे

जीय अति अकुलाइ ॥ यह दुख काहि कहौं सखि

नो विन मेरे नहीं एक सहाइ ॥ कहा विलंब कर
नि जेवे को तोसों कहति सखि सोहें खाइ ॥ वह
मूरति गडि रही हियेमें निकसति नहीं न और उपा
इ ॥ उठिये है सुनि विनती मेरी जलमति सुरत सि
कन कौं राइ ॥ रागिनी बंगाली नाल अष्टपदी
वर्वरी ॥ हरिके विभावन को भाव जिनि दिखावे

वै·रा·
६२
63

झगास्याई ॥ जिनि दिखावे नाथ जिनि दिखावे ॥
जिनकी सेवा नि किये होत उरमति हिये हरिके श
ण रूप जस नरत विसरावे ॥ झंपतरा ॥ जिनके
परसत सदा सरस मन विषय रस मगन है जात
अति पाप उपजावे ॥ करत कछुना डरै वैर मैं वि
त धरे मन सेवा परिहरे जुवति चित लावे ॥ साध

निंदा करै झूठ भाषै सदा प्रीति रावै विषयी वचन
मन भावै ॥ अनेक साधन करि जाति राख्यो भाव
छिन मैं जल अग्नि ज्यों बुझावै ॥ तेई जन विसार
जे करै औरे बात कुसल सुहात संसार पावै ॥ साधु
संगति रहै वचन हरि गुण कहै सनत निवहै रसि
क सोई सार पावै ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥

वे॰ गा॰ ६४

64

अष्टपदी ॥ प्रकटित सकल सृष्टि आधार ॥ इतिश्र
ष्याई ॥ श्रीमद्वल्लभ राज कुमार ॥ इत्यंतरा ॥ ध्ये
य सदा पद अंबुज सार ॥ अगणित गुण महिमाज्ञ
अपार ॥ धर्मादिक द्वारे प्रतिहार ॥ पुष्टि भक्ति कों
अंगीकार ॥ श्रीविट्ठल गिरिधर अवतार ॥ नंद
दास कीनो वलिहार ॥ रागिनी वेंगाली ताल

अष्टपदी ॥ जैं जैं श्रीवल्लभ प्रभुश्री विठलेशनाथे ॥ ३
तिप्रसगाई ॥ निजजन पर करत कृपा धरत हाथमाथे
धुव ॥ इंद्रंतरा ॥ दोष सबै हरि करत भक्त भाव हिये
भरत काज सबै सरत सदा गावत गुण गाथे ॥ काहे
को देह दमत साधन करि म्हरवे जड विषमान श्रा
नंद तजि गहत कौ ग्रथाथे ॥ रसिक चरण शरण स

वे॰ गा॰ ६५ 65

दा रहत हैं बड़भागी जन अपनो करि गोकुल पति भ
जन नाहिं बांधे ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
अष्टपदी ॥ अथ रास के कीर्तन ॥ राधा रँगनि मिल
वन नई ॥ इन पर आई ॥ नाचति ब्रज ललना तनु थे
ई ॥ रमेतरा ॥ सुवरित कटितट मणि मेखला ॥
अभिनव जनित चेवल करतला ॥ नूपुर संचित मोरि

नकुला। लेति उरगगति प्रभु दिन मूना॥ कुंभदास
प्रभु देखेक वारी॥ रिझए लाल गोवर्द्धन धारी॥
रागिनी बंगाली ताल ॐ प अष्टपदी॥ नाच हूष भान
खता हंस खता पुलिन मध्य हंस हंसिनी मयूर मंडली
वनी॥ इत्यस्थाई॥ गावत गोपाल लाल मिलवत
ऊपताल चाल लज्जित प्रति मत मदन कामिनी अनी·

बे॰रा॰
६६
66

पदिक लाल कंठ माल तरल तिलक झलक भाल सु
वर्ण फूल बरउ फूल नासिका मनी ॥ नील कंचुकी
सुदेश चंपकली गलित केस सुरचित मणि दाम चो
म कटि सुकाछनी ॥ मरकत मणि वलय पाव सु
रचित नूपुर सुभाव जावक जत चरण नावत चेटि
का यनी ॥ मंद हास भोरपास रास लास भव विलास

ग्रलवा लागलेन स्वधर राधिकाधनी ॥ कामश्रेयकि
नव बंधरीऊ रहे वरण गहे साथ साथकहन फिरत
राधिका धनी ॥ भेटन गहि बाहू मूल उरज परस
भई फूल व्यास वचन सानुकूल रसिक जीवनी ॥
रागिनी बंगाली नाल ३ अष्टपदी ॥ जननि ज
गावति उठो कन्हाई ॥ ध्रुपस्थाई ॥ प्रकट्यो तरनि

वे॰गा॰ किरनि गनत ब्राई । अंतरा ॥ आवहु वेदवदन दि
८७ खराई ॥ वार वार जननी वलि जाई ॥ सखो हा
67 र सब तुमहि बुलावत ॥ तुम कारन हम धा
य आवत ॥ सूर स्याम उठि दरशन दीन्हो ॥
माता देखि मुदित मन कीन्हो ॥ इति प्रा
भात: ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ जमुनापद ॥ जमुना
जमुना नाम भजो ॥ इतिअस्थाई ॥ हरि जनकरो
अराधन इनको और कुपंथ नजो ॥ इत्यंतरा ॥ देहै
सकल पदारथ तमको औरको नाहि भजो ॥ ब्रज
पति की अतिही प्यारी हैं तातें सकल सिंगार सजो
समुदाय ॥ रागिनी बंगाली ताल १ जमुनापद

झलकियो नीलो वर पीताम्बर महियो ॥ इत्यस्थाई
कुंडल लोल अलक वेसर सौं पीत पट हार उर में बनमा
ल बहियां में बहियो ॥ इत्यंतरा ॥ हंसगति अति
छवि अंग अंग रही फबि उपमा विलोकि बेको
पटतर नहियो ॥ काम कलोल छूटे सेज ह
के सब लूटे सब प्रभु बिलसे कदम हू की छहियां

रागिनी वेंगाली ताल २ ॥ अरुण उदय आ
ये मेरे नंदलाल ॥ इन्नास्थाई ॥ सिथलिन अंगउ
नींदे नयननि घरनी धरत डगमगी चाल ॥ इन्न
तरा ॥ अधरनि अंजन पीक कपोलनि लटपटि
पाग जावक लिय भाल ॥ तापर सोंह करत हो
व्रजपति उरसि बिराजत बिन गुण माल ॥ ॥

बै·रा· रागिनी वेरागी ताल ३ जमुनापद ॥ प्रात
६५ समय आवत गिरिधारी ॥ अस्थाई ॥ जेजमह
लैन चले भोर उठि मेरा राजति वृषभान दुलारी ॥
अंतरा ॥ घूमत नयन उनींदे निशि के निरखि
मरूवरी गइ वलि हारी ॥ पीक कपोलनि लगे
दुहूनि के व्रजपति सिथिल गात अति भारी ॥

रागिनी बंगाली ताल ॥ः जमनापद चर्चरी ॥
सुमिरि मन गोपाल लाल सुंदर अति रूप जाल मि
टि है जंजाल सकल निरखत संग गोप वाल ॥ इन्य
स्थाई ॥ मोर मुकुट शीश धरे बन माल सुभग गरे
सबको मन हरे देखि कुंडल की झलक गाल ॥
इंतरा ॥ आभूषन अंग सोहे मोतिन के हार पोरे

वे॰रा॰ कंटसरी मोहे इगागोपी निरखत निहाल ॥ स्त्रीन
७॰ स्वामी गोवर्द्धन धारी ऊवर नंद स्रवन गाइनके पा
७० छे पाछे धवतहैं लटकीली चाल ॥ रागिनी वे
गाली ताल जमनापद बर्वरी ॥ प्रात भया
जागो वलिमोहन सावदाई ॥ इनास्थाई ॥ जन
नी कहे वार वार उठो प्रातके प्रयार मेरे उरवहार

श्याम सुंदर कन्हाई ॥ धनासरी ॥ दूध दही माखन
घृत मिसरी मेवा बदाम पकवान भांति भांति विविध
रस मलाई ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी लाल भोजन
करि ग्वालन के संग वन गोचारन जाई ॥ रागिनी
बंगाली नाल ३ जमनापट ॥ भई भेंट अचानक
आइ ॥ इत आई ॥ हों अपने गृहतें चली जमुना

वे॰रा॰ ७२ वे उनते चले चारन गाइ ॥ इन्पनदा ॥ निरखत रू
प ठगोरी लागी उनको डगर भर चल्यो न जाइ ॥ श्री
न स्वामी गिरिधरन कृपा करि मोतन चितये मुरि
मुसकाइ ॥ रागिनी बंगाली ताल २ जमुना
पद ॥ उठहु नंद कुमार भयो भिनुसार जगावत
नंदरानी ॥ ज्ञनपस्याई ॥ झारीके जल वदन पखारे

खन कहि कहि मांगत पानी ॥ अन्तरा ॥ माखन
रोटी अरु मधु मेवा जो भावे सो लीजे आनी ॥ सूर
श्याम मुखनिरखि जसोदा मनही मनहि सिहानी०
रागिनी बंगाली ताल १ जमुनापद ॥ भोर भए
भोगी रस बिलसि भये ठाढे ॥ इतिअस्थाई ॥ जागे
जामिनी जगाय भामिनी अंग संग समाय स्याम सि

वे॰रा॰
७२

थल डरनि डरन देन आलिंगन गाढे ॥ इत्येनवा ॥

चूमन रस मन मगन लूथेहू डग परन पगन छिन

छिनु चिन चौप चोजनि मोज मनोजनि बाढे ॥ अ

तिसमै रसिक राय शोभा बरनी न जाय वह विहार

नित्य सिलडाय प्रेम रंग रंगी काढे ॥ रागिनी वे

गाली ताल जमनापद ॥ चर्चरी घातही कि

गोर जोरि फेंज विलनी । इमस्याई ॥ अंग अंग ग
णन रंग गौर श्याम रूप नागि मदन केलि खवन मे
थु फूल फेलनी । इंगनग ॥ नरनि नेदनी खनीर
गावन पिय अंगकीर विगुण मरून संयधीर श्रमज
अंबु फेलनी । वर विहार गनी खन श्रग दिवाज्ञानी
विरल विमल बारनेक भजा कंठमेलनी ॥ रागि

वै·रा· री बंगाली ताल ३ जमनापद ॥ मोहन छैल वारे
७३ वार। स्थाई। अरु फिरहे मझना हल निरवारत वा
73 र ॥ अंतरा ॥ रतिमानी संग नेह नेह के छूटे
वेद कंचु की टूटे हार ॥ निसि के जागे दोऊ नैना उ
रु फिर है चलति जोवन मद भार ॥ हरस्याम संगा
यह भाव देखत रीझे वारंवार ॥ इति श्रीमोताः ॥

रागिनी बंगाली ताल १ षट्पदी जमुनाजीके ॥
जैजै श्रीसूरजा कलिंद नंदनी ॥ ध्रुपदस्थाई ॥ गुल्म
लता तरु सुवास कुंज कुसुम मोदमत गुंजत अलि
सुभग पुलिन वायु मंदनी ॥ ध्रुपदतुक ॥ हरिसमान
धर्म सील कांति मजुल जलद नील कटिनितंब भे
दन निज गति उतंगनी ॥ सिकताजन मुक्ताफल के

वे॰रा॰ ७४

74

कण जन भुज तरंग कमलनि उपहार लेन पियावर
ण वेदनी ॥ श्रीगोविंद गोपी संग श्रम जलकण सि
कतंबा अति तरंगनी सुरसिक रसमह फंदनी ॥ छीत
स्वामी गिरिवरधर नंद नंदन आनंद जमुने जन दुरि
त हरन दुखनि कंदनी ॥ रागिनी बंगाली ताल ४
षट्पदी जमुनाजी के ॥ अति मेजल जल प्रवाह म

नोरमा सुखावगाह नवनव अनिराजत अति नवनि
नेदनी ॥ इन्पस्याई ॥ श्याम वरन झलक रूप लाल
लहरि वर अनूप सेवत संतन मनोज वाअमंदनी ॥
इत्यंतरा ॥ कुमुद कंज वनविकास मंडित दिस दि
स सुवास कूजित कलहंस कोक मधुर छंदनी ॥
प्रफुलित अरविंद पुंज कोकिल सुकसार गुंज सेवि

वे॰रा॰ न अलिभँरा पुंज बिबिदबेदनी ॥ नारद सुक सनक
७५ ब्यास थावत मुनिकरन आस वाहन हैं अलिन बास
75 सकल दुख निकंदनी । नाम लेत कटत पाप ऋषि
किन्नर मुनि कलाप करत जाप परमानंद आनंद
कंदनी ॥ रागिनी बंगाली ताल चंचल षट्पदी॰
आये लाल डगमगात प्रात ॥ इत्यस्थाई ॥ भाल

महावर पीक कपोलनि अधरन मसि नयननि अरसा

न ॥ इत्यंतरा ॥ मोती माल लसै उर बिनु गुण सिथ

लित पाय सिथिल सब गात । बोलत बोल अटपटे मो

हन तापर सौंह करत न लजात । ओढे नील वसन

तम आये छैल छंद हृदि माजललोन । सोवे बोल

निवारे ब्रजपति माया कर आये परभात ॥ ॥

बं॰रा॰ रागिनी बंगाली ताल १ षट्पदी जमनाजीको
७६ घूमत रतनारे नयन सकल निसा जागे ॥ इतिश्र
76 स्थाई ॥ लटपटी सुदेस पाग थल कनकी झलक
बीच पीकछाप जग कपोल अधरनि मसि लागे ॥
अंतरा ॥ बिन गुण माल बनी बीच नखनि रेखठ
नी पलटि परे बसन पीट केकण सोहागे ॥ बाक ब

म्यो चंदन वनमाल लग्यो चंदनसो स्यामगात वरण

परस्त प्रिया प्रेम पायो ॥ वचन रचन कियो सोऊ वे

ग आये भोर सोऊ वलि वलिया वदन कमल सोभि

त अनुरागे ॥ जाय वसो वग्रही धाम विलसे जहां

सकल जाम गोविंद प्रभु वलिहारी करजोरे मागे ॥

रागिनी वंगाली ताल 3 षट्पदी जमुनाजी का ॥

वे·रा·
७७
77

आये भोर उनींदे श्याम । रति श्रम स्याई । सकल निसा
जागे प्यारी संगहारे हो रतिरण संग्राम । इत्यंतरा ॥
सिथलित पाग भाल पर जावक हिये विराजत वि
न गुण माल ॥ कुंमकुम तिलक अलक पर सेंउर श्र
भग पीक सोहत दोउ गाल ॥ कंकन पीठ राउ्यो उर
नख छत जनु उगत साऊँ है जको वेद ॥ छीत स्वामी

गिरिधरन भले तुम मोहि खिजावत हो नंदनंद ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजी का ॥

कमल नयन हरि करो कलेवा ॥ १ निग्रस्थाई ॥ माख

न रोटी सद्य जम्यो दधि भांति भांति की मेवा । खारि

क दाख चिरौंजी किसमिस उज्जल गरी बदाम । सफ

री सेव छोहार सिंघारे जे खरबूजा नाम ॥ अरु मेवा बहु

वे॰रा॰ भांति भांति के षटरस के मिष्टान ॥ सूरदास प्रभु क
७८
रत कलेऊ रीझे श्याम सुजान ॥ रागिनी बेराली
ताल ४ षट्पदी जमुनाजीके ॥ भोर भए निर
खत हरिको मुख प्रमुदित जसुमति हरषित नंद
इतिश्रुपगाई ॥ दिनकर किरनि कमलजनु विक
सित उर प्रति प्रति उपजत आनंद ॥ इतिश्रीतरा ॥

वदन उघारि जगावत जननी जगऊ मेरे आनंदकंद-
मानऊ मथ्यो ष्वीर सिंधु फेन फटि दयौ दिखाई पूरन
चंद ॥ जाको ईश शेष ब्रह्मादिक गावत नेति नेति
श्रुति छंद ॥ सोई गोपाल व्हे गोकुल भीतर सुरसो प्र
कटे परमानंद ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ ॥
षटपदी जमुनाजीके ॥ तेही जाऊ जहां रैनि ऊते ॥

वे.गा.
७९
79

इतिश्रुस्याई ॥ काहेको डराव करत नेद नेदन मिटे
न ग्रेक उर विन्हजते ॥ इत्येनरा ॥ विनश्रुन हारम
नो हर उर पर परम वनर हियलाइ सते ॥ विथुरी
अलक अटपटे भूषन लटे काम ऊव वीवडते ॥ ८
पान दागन रवैरव छवीली भामिनि भवन भाव
भरते ॥ सूरश्याम देविश्रुनि शोभा लोचन ललित

उनींद ऊते ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ षट्पदी ॥
लालन आये री रैनि गवाई ॥ इति अस्थाई ॥ निसिभ
ई छीन बोले तमचुर खेरा ग्वालिन नवहि हँसी मुस
काई ॥ इतंतरा ॥ अरुन किरिनि मुख पंकज विग
सित मधुप लियो संदर समजाई ॥ चंद मलीन भयो
दिन मनि ते ऊसद गये सब ही ऊंभिलाई ॥ चारि

वै·रा· जाम जगत बीते मोहिं तुम्ह बिन मोको कछु न सो
८·
हाई ॥ सूरश्याम या दरस परस बिन सब निशा गई
80 मेरी नींद हेराई ॥ रागिनी वेगाली ताल ३ घट
पदी जमुनाजीके ॥ जानत हो जैसे गुणनि भरे हौं
इतिसुरस्याई ॥ काहेको डराव करत मनमोहन सो
ई पै कहो तुम जहो फुरे हौ ॥ रंगतरा निशि जागत

निज भवनन भावन आलस बेंन सब अेकथरे हो ॥
बंदन तिलक मिल्यो कहू बंदन काम कुटिल कच
उर उघरे हो ॥ नम प्रति कमल किसोर नेंदसुत क
हो कोंनके चित हरे हो ॥ औविकही जिय जानि सू
र प्रभु सोंह करन को होत खरे हो ॥ रागिनी
बंगाली ताल २ षट्पदी जमनाजीका ॥

बे॰ गा॰ ८८

81

हाहा हो पिय बात कहौ ॥ अतिअस्याई ॥ आप क
ह्यु जिय नरक गाहन हौ तोतम सौ हो मौनगाहौ ॥
इनेंपनरा ॥ कहा हूक हमको पिय लागे हमिरहे
हौ काहेजू ॥ नवही नैं बैस हौ हाढे मोननको न
रि वाहेजू ॥ अबहमरो अपराध क्षमोगो कृपा क
रो मरवबोलोजू ॥ स्हरमणाम अबतजो निठुराई राढी

हृदयकी खोलौगज ॥ रागिनी बंगाली ताल २
षट्पदी जमनाजीकी ॥ जाहु नहे कहा सोवत हो
इतिश्रस्थाई ॥ जासेग रैनि विहातन जानी भोर भये
तेहि सोवत हो ॥ इत्यंतरा ॥ औरनि को छिन जाग
वीतनहै हम निहचीने नागर हो ॥ चुमत नयन ज
म्हात वारहो रतिसंग्राम उजागरहो ॥ मैषव कहति

बे·रा· ८२ तुम्हारे हितकी नाहीके गरह सोयरहै ॥ सूरश्याम

८२ कैसी जियकोहै वहरस वाही विनतलहै ॥ रागिनी

82 बेगाली ताल ३ षट्पदी जमनाजीके ॥ हमहैं

पर पिय रूसेहै ॥ इतिश्यामस्याई ॥ बोलत नहीं मूक

कौं कैरहे ग्रति रंग हीन कछूसेहै ॥ इतिश्वेतरा ॥

नव निरखत औरहि हित चित वितु किथौं कहूं तम

लसैहो ॥ नवहसि वदन मिलत आजहि कछु और
भये निठु लसैहो ॥ उग मगात पग उनहि परतहै
चित चंचल उनहू सैहो ॥ सूरदास प्रभु सोचि भाषि
गये त्रिय अंग अबलानूसै हो ॥ रागिनी बंगाली
ताल ४ जमनाके षट्पदी ॥ श्यामा संग श्याम
नवन रास संग रागनि ववत राशि अंबेड मंडलह

बे॰रा॰
८३
83

सि शरद जामिनी ॥ इति श्रस्थाई ॥ नरति नरन कु
ल मण्डल प्रबलसमि नरज प्रनीत विविध पवन ता
प वदन काम कामिनी ॥ इत्यंतरा चरण वलित
वङ्क वलित ललित गान कलित नान मान स्वर नि
यान निरलेति भामिनी ॥ वर सुगंध रंग ताल म
णि मृदंग विंगबाल लाल सुधर श्रीधर राजराज

गामिनी । रिझै पतिहिं गति दिखाय लेत ऊंवर के

टलाय श्याम छटा माऊ मनहु डरति दामिनी ॥

नैन सै नम्र विलास मंदहास हाव निवास हसनि ध

नि ध्वनि बोलत जै आस स्वामिनी ॥ रागिनी वेगा

ली ताल २ षट्पदी जमुनाजी का ॥ नैन श्या

म सखि लूटत हैं ॥ इंपछ्रस्याई यहीबात मोको

वे॰रा॰ ८४ 84 नहि भावे हमने काहू छूटतहै ॥ इमोनरा ॥ महाप्र
भै निधि पाइ अचानक आपुहि सबै भुरावतहै ॥ अप
ने है ताते वह कहियत प्रताप उनहि भरहावतहै ॥
छिन छिन प्रति छवि सागर लहरन बरजे भौंहे तानत
है ॥ सूरदास जी देनकहू एक कहौ कहा अनुमान
तहै ॥ रागिनी बेंगाली ताल ३ षटपदी जमनाके

द्रगिके मन वारे कान्ह खेलो प्यारे पलके ॥ इन्यग्रस्ना
ई ॥ सीश मुकुट लटा छुटी और छुटी अलके ॥ इन्य
नरा ॥ सुरनर मुनि हार ठाडे दरस कारन किलके·
नाशिका के मोती सोहै बीच लाल ललके ॥ कटिपी
तांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलके ॥ सूरदास
मदन मोहन दरस देहो भलके ॥ रागिनी बंगाली

बें॰रा॰ रा॰ २ षट्पदी ॥ राम कृस्न कहिए निति भोर इनमधाई
८५ वे श्रवध ईसा यन्नव यदेवे ब्रज जीवन मोहन चोर ॥
इन्येनदा ॥ विनके छत्र चंवर सिंघासन भरत शत्रुघ
न लछमण जोर ॥ उनके लकुट पीतांबर गायन के
संग नंद किशोर ॥ उन सागर मैं सिलातराई उन रा
ख्यो गिर नख की कोर ॥ नंद दास प्रभु सब तज
भजिये जैसे निरखत चंद चकोर ॥ इतिश्रीभोगः ॥

रागिनी बेंगाली ताल ३ अष्टपदी जमुनाजीके ॥
श्रीजमुना देवी कौन भलाई ॥ इतिअस्थाई ॥ नाम
रूप गुणले हरिजूको प्यारी अपनी चाल चलाई ॥
१अंतरा ॥ उनवस देश कियो भानाको तुमहिं
परसि कोउ उनहि न जाई ॥ जेतन तजत नीर तु
मरे ते तात किरनि में गैल लगाई ॥ भक्ति वत्सको

करि हनवे अथमनिको ले थानि मिलाई ॥ आछनषण
म आन उजल करि नात नपत आछसीतल नाई ॥ ज
ल कोकुलकरि अनल अचन को यह सानिके कोउ कौ
पनिआई ॥ निशदिन पद्य पान पनिनन को नदपियाद्य
यर अभ्र मनभाई ॥ रागिनी बेगाली नाल २ ॥
जमनाके अष्टपदी ॥ नहींजाऊ जहां निसावसे ॥

रतिग्रस्याई ॥ जानति हो पिय चतुर शिरोमणि नाग
र जागर रागरसे ॥ अंतरा ॥ तुमन हो मानो पिय
उर गनी नव विलास श्रम सेजउसे ॥ श्याम उरस्थ
ल परनख सोभित गगन उडुजन इंदुलसे ॥ का
जल अधर प्रकट देखियत है नागवेलि रंग निपट
लसे ॥ लटपटि पाग महावर के रंग भामिनि पगाय

वै.रा. ८७

87

रसीसबसे ॥ बिगलित केशमरगजी माला पीढि
वलयके चिन्हवसे ॥ सूरदास प्रभु प्रिया वचन सु
नि नागर नगधर नेकेंहसे ॥ रागिनी बेंगाली ता
ल ३ अष्टपदी जमुनाजीके ॥ क्यों सुडरनहीं
प्रगटभये ॥ इतिश्रमस्याई ॥ कहतहैं नयन निशाके
जागे मानो सरसिज प्रफुलितये ॥ इस्यंतरा ॥ जावक

भाल नागर सलोचन मसिरेखा अधरनि जोटये ॥
वलया पीठ नितेंव चरण मणि चिन्ह गण केंद हारव
नये ॥ भुजनाटंक ग्रीव सोर चेदन चिक्र कपोल दसन
ग्रसये ॥ आलिंगन चेदन ऊच चार्विन मानो है शशि
उर उदये ॥ चरण सिथिल अरुवल उगामगी चूमत
घायल समर समये ॥ सूरसखी कैसे मन माने सुंदर

श्याम कुटिल मगाये ॥ रागिनी बेंगाली ताल ३
जमनाके अष्टपदी ॥ नंद द्वार एक जोगी आयो सीं
गी नाद बजायो ॥ इति अस्थाई ॥ शीश जटा शशिब
दन सोहायो अरुन नयन छबि छायो ॥ अंतरा ॥
रोवत खीजत कृष्ण सांवरो रहत नहीं हुलरायो ॥
लियो उठाय गोद नंद रानी द्वारे जाय दिखायो ॥

अलख अलख करि लियो गोदमें चरन चूम उर लायो ॥
श्रवण लाग कछु मंत्र सुनायो हसि बालक किलका
यो ॥ चिरजीवो सुत महर तिहारो हौं जोगी सुख पायो ॥
सूर स्याम रम चल्यो रावलो शंकर नाम बनायो ॥ ॥
रागिनी बेंगाली ताल ३ जमुनाजीके अष्टपदी ॥
राम चरन अभिराम काम प्रति तीरथ राज विराजे ॥

वे॰रा॰ ८९
89

इति प्रभु स्याई ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतल वर प्रेम प्रक
य वट छाजे ॥ छंदं तथा ॥ श्याम वरन पद पीठ अरुण
तलल सत विसद नख श्रेणी ॥ मनो रवि सुता सार
दा सुर सरि मिलि चलि ललित त्रिवेणी ॥ अंकुश कुलि
स कमल ध्वज रेखा भँवर तरंग विलासा ॥ मज्जन सु
र सज्जन मुनि व्रजन मुदित मनोहर वासा ॥ चिन वि

राग तप जोग जोग व्रत विन नन नीरव्य मागे ॥ सोस
व सुलभ दास तुलसी प्रभु पद प्रयोग अनुरागे ॥
रागिनी वेगाली ताल ८ ॥ श्रीकृस नाम रसनार
ट सोई धन्य कलिमें । इमस्याई । जाके पदपंकज की रे
णुकी वलि में । इन्येनरा । सोई सुकृत सोई पुनीत सो
ई कुलवेना । जाके निश दिना रहे कृस नाम विना ॥

वे॰रा॰ ५०

९०

जोग जग्य तीरथ व्रत कृस्न नाम मांहीं ॥ विनां
कृस्न नाम कलि उधार और नांहीं ॥ सब साधन
को सार कृस्न कबहू न विसरिये ॥ कृस्न नाम
लै लै भव सागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धर
न प्रभु परम मंगल कारी ॥ उधरे जन सूर दा
स ताकी वलिहारी ॥ इति श्री भोगः ॥ ॥

रागिनी बंगाली ताल ४ जमुनाकेपद ॥ जागि
ये गोपाल लाल प्रगट भयो हंसमाल मिटै गयो अंध
कार उठो जननि न्वालदेखाई ॥ इतिप्रथमाई ॥ म्वज
लिन भे कमल जाल कुमुद वृन्दवन विहाल मेटहु
जंजाल त्रिविध तापनननसाई ॥ इत्येपना ॥ ठाढे
सब सखा द्वार कहत नेट के कुमार देखतहै बार बार

वे॰ रा॰ ग्राइये कन्हाई ॥ गैयनि भई वड़ी वार भरि भरि पय
५८ थन निभार वछ राग माकर प्रकार तुम विन जइ
९१ राई ॥ ताते यह ग्रटक परी दोहन काज सो हेकारी
उठि ग्रावहु क्यों न हरी वोलत वलभाई ॥ सखिने प
रजंक किआरि वेदवदन दैउआरि जसुमति वलिहा
रि वारि लोचन सखदाई ॥ येन उहन वले धाय रोहि

णी कौं लई वुलाय दोहनी मोहिँदै मगाई तवही
लै आई ॥ वछरा दियो थन लगाय दुहन वैठिके
वन्हाय हंसत नंदराय तहां माता दोउ आई ॥ दोह
नी करें हथ थार सिखवत नंद वार वार वहछवि
निरखि वार पार नंदघर वधाई ॥ तव हलधर कह्यो
सुनाय धेनु वन चलो लिवाय मेवा लीन्हें मगाय

वे॰रा॰ विविध रस मिठाई ॥ जेंवत बलराम श्याम सेनन के
५२ सावद धाम धेनु काज नहि विश्राम जसुदा जल ल्याई॰
92 श्याम राम मुख पखारि ग्वाल बाल लये हेकारि ज
मुना तट मन विचारि गाइन हेकराई ॥ संगावेणु
नाद करत मुरली सुर मधुर धरत ब्रजांगन मन हर
न ग्वाल गावत सुघराई ॥ वृंदावन चरत जाय धेन

बरनि सका अपार श्याम हरष पाय निरखि सूरज
बलिजाई ॥ रागिनी बंगाली ताल ३ जमुना
केपट ॥ जै गोविंद माधो मुकंद हरि ॥ इतिअस्थाई
कृपा सिंधु कल्यान केमुआरि ॥ अंतरा ॥ कृपति
पाल केशव कमलापति । कृस कमल लोचन अग
तिनगति । रामचंद राजीव नयनवर ॥ शरण सा

वे. रा.
९३

93

॥ श्रीपति सारंगधर । बनमाली बामन बिठ्ठल ब
ल । बासुदेव बासी ब्रजमंडल । खर दूषण त्रिशि
रा सिर खंडन । चरण चिन्ह दंडक भवमंडन । बकी
दवन बक बदन बिदारन । बरुण बिषाद नंदनिस्ता
रन । ऋषि मख त्रान ताडका मारक । बन बासि ना
न बचन श्रुति पालक । गोकुल पति गिरिधर गुण

सागर । गोपीरवन रासरति नागर । रघुपति प्रबल
पिनाक भंजन । जग हित जनकसुता मनरंजन ।
काली दमन केसिकर पातन । बक अरिष्ट धेनुक
प्रलंब घातन । करुणामय कपिकुल हितकारी ॥
बालि विरोध कपट मृग हारी । गुप्त गोप कन्या व्र
न हरन । द्विज नारी दरसन उरवि चरन । रावण कुं

बे॰रा॰
५४

९५

भकरण सिर छेदन । नर वर सातनपक नर भेदन ॥
शोवचूड बालर संघारन ॥ शाक्त कहै मेरी रक्षाकार
न । उमर कृपा गीय हतकारी ॥ दरसन दै सेवरी उ
हारी ॥ जेपद सदा शेभु हित कारी ॥ जेपद परसि म
र सती गारी । जेपद रमा हृदै नहि टारी ॥ जिनि पद ते
निउं भवन नियारी ॥ जेपद वृंदावनहि विहारी ॥

जेपद पांडव ग्रह पग धारी ॥ जिनि पद शकटा स
र संघारी ॥ जेपद अहिफन फन प्रतिधारी ॥ जेप
द भक्तन के सुखकारी ॥ जिनि पद रज गौतम त्रि
य तारी ॥ सूरदास सुरजाचत वेद पद ॥ करहु कृ
पा अपने जन पर सद ॥ ॥ रागिनी बंगाली ता
ल १ जमनापद ॥ कृस्न नाम भावे मोहि कृस्न

वे·रा·
५५
95

नाम भावै। वलिहारी ताकी ज्यौं कृस्न नाम गावै·
वसुधा को सार कृस्न मेरे मन के अधार। कृस्न श्रव
ण मंगल रूप कृस्न सब विचार। नैनन को मूल
कृस्न रुचन सकल खेल कृस्न व्रज समुद्र को वार।
कृस्न शिव को आधार मेरे रसना को भाग्य कृस्न ध्या
न धार। मन को सुहाग कृस्न रसना नैनन को नेत्र

कृष्ण सब मंगल सवार । यह रामराय कहत कृष्ण
नाही जपत भगवान कृष्ण वारंवार । हरे हरे हरे
कृष्ण कृष्ण कृष्ण राम राम राम । नारायण नाराय
ण वासुदेव वासुदेव गिरिवरधर गिरिवरधर श्या
म श्याम । दीनबंधु दीनबंधु वैकुंठधाम ॥ होत
प्रात वड़ भुनीन लेत हरिकोनाम । दामोदर दामो

वे·रा· ९६ 96

दर चक्रपानि नरहरि हरि नरहरि हरि मुर विष्णुमुरा
री ॥ मधुसूदन मधुसूदन सांवरो वनवारी ॥ जमु
ना के नीरे नीरे वृन्दावन धाम । सूर श्याम रटन व
हन राधावर नाम । भोर उठ सुमरन करो होय सब
ही काम । वंसी वट जमुना तट सुंदर घन श्याम ॥
रागिनी वेगाली ताल १ जमुनापद ॥ वासरी

बजाई आज रंग सौं मुरारी ॥ इतिअस्थाई ॥ शिव स
माधि भूलि गई मुनि मन की नारी ॥ इअंतरा ॥
भेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी ॥ सुनतहीं
आनंद भयो लगी है करारी ॥ रंभा सब ताल तुकी
भूली नृत्य कारी ॥ जमुना जल उलट बहो सुथ
ना सम्हारी ॥ श्रीबृंदावन बंसी बजी तीन लोक

बें॰रा॰ प्यारी। ग्वाल बाल मगन भये ब्रज की सब नारी ॥
९८
सुंदर श्याम मोहनी मूरति नटबर वपुधारी ॥
९७ सूर किशोर मदन मोहन चरणौं बलिहारी ॥
रागिनी बेंगाली ताल २ जमुनापद ॥ देखो
री यह कैसा बालक रानि यशोमति जायाहै ॥
रुनिग्रस्याई ॥ सुंदर वरन कमल दल लोचन दे

खेन वेद बजायाहै । इन्द्रोनरा । पूरण ब्रह्म अलख अ
विनाशी प्रगट नंद घर आयाहै । मोर मुकट पीतांबर
सोहै केसर तिलक लगायाहै । कानन कुंडल गल
विच माला कोटि भानु छवि छायाहै । शंख चक्र ग
दा पद्म विराजे चतुर्भुज रूप बनायाहै । परमेश्वर पु
रुषोत्तम स्वामी जसुमति सुत कहलायाहै । सच्छ

वे॰ग॰ ५८ 98

कछ वाराह श्री वामन राम रूप दरसायाहै । खंभफा
रि प्रगटे नरहरि वभ्रजन प्रहलाद छुडायाहै । परसरा
म बुध निःकलंक होय भुवका भार मिटायाहै ॥ का
ली मर्दन कंश निकंदन गोपी नाथ कहायाहै । मधुसू
दन माधो मकुंद प्रभु भक्त वछल पद पायाहै । दामो
दर गिरधर गोपाल हरि त्रिभवन पति मन भायाहै ॥

शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गा
यो है । सुर नर मुनि के ध्यानन आवत अद्भुत जाकी
माया है । सो घर ब्रह्म प्रगट होय ब्रज में लूट लूट दधि
खायो है । परमानंद कुल मन मोहन वदन कमल वि
न लायो है ॥ रागिनी बंगाली ताल २ जमनापद
मे जोगी जस गावे गावां मे जोगी जस गाया । तेरे सुत

वै॰रा॰ के दरसन कारन मैं काशी मैं आया। इनि प्रसधाई। परे
५५ ब्रह्म स्रगुण अकथीनम सकल लोक जा माया॥ अल
११ ख निरंजन देखन कारन सकल लोक फिर आया॥
धन तेरो भाग जसोदा रानी जिन ऐसा सुत जाया॥
गुनन बडे छोटे मन भूलो अलख रूप धर आया। जो
भावे सो लीज्यो रावल करो आपनी दाया। देह अशी

श मेरे बालक को अविचल बाढै काया । नामै लेहौं पा
ट पटेवर नामै केचन माया । मुख देहु मेरे बालक
को यह मेरे गुरुने लखाया । कर जोरे विनवे नंदरानी
सुन जोगिन कैराया । मुख देखन नहि देहो गव
ल बालक जान डराया । कालापीला गोर रूपहै बा
हेवर ओढाया । कहूं नयन की दृष्टि लगे कहूं बाल

वे॰ग्रा क जान दिखाया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो
१०० कौं जान दिखाया ॥ तीन लोक का साहब मेरा तेरे भव
100
न छिपाया ॥ हंस लाल को न्याई जसदा कर अवलस्र
ते छाया ॥ कर पसार वरनन रज लीनी सींगी नाद व
जाया ॥ अलख अलख कर पाय कुपहै हंस बालक कि
लकाया । पांव वेर पर कर्मी करके अति आनंद वढाया॰

हरिकी लीला हरमन अटक्यो चित नहीं चलत चलाया·
अखिल अलोडके नायक कहिये वेदचारहि अगराया·
इंद्र वेद सुरज सारद सनकादिक पारनपाया ॥ लाग
श्रवन मंत्र दिजो सुनाया हंसि वालक मुसकाया ॥
कौन देशके जोगी हो तुम कौन नाम धरवाया ॥ क
हो वास यह कहन जसोदा सब जोगिनके राया ॥

बे·गा· तुमही ब्रह्मा तुमहीं विस्नु तुमही ईश कहाया । तु
१०२ म विश्वंभर तुम जग पालक तुमही करत सहाया·
10 सूर श्याम कहे सुनो जसोदा शंकर नाम बताया ॥
इति श्रीआभोगः ॥

रागिनी बंगाली ताल ३ ॥ अविगत आदि अनंत
अनूपम अलष पुरष अविनासी ॥ पुरण ब्रह्म प्रगट
पुरुषोतम नित निज लोक विलासी १ ॥ जहं वृंदावन आ
दि अजर जहां कुंजलता विस्तार ॥ तहं विहरत प्रिय प्रीत
म दोऊ निगम भृंग गुंजार । २ ॥ रतन जटित कालिंदी
के तट अति पुनीत जहं नीर ॥ सारस हंस चकोर मोर

वं.रा
१०२
102

खग कूजत कोकिल कीर ३ जहां गोवर्द्धन परवत म
निसै सघन कंदरा सार ॥ गोपिन मंडल मध्य विराजत
निशि दिन करत विहार ४ खेलत खेलत चितमें आ
ई सृष्टि करन विस्तार ॥ अपने आपकरि प्रगट कि
यो है हरी पुरुष अवतार ५ माया कियो क्षोभ बहु वि
धि करि काल पुरुष के अंग ॥ राजस तामस सात्विक

त्रिगुन प्रकृति पुरुष को संग ६ कीन्हें तत्व प्रगट तेही
छिन सबै अष्ट अरु बीश ॥ तिनके नाम कहत कवि
हरजी निर्गुण सब के ईश ७ पृथिवी अप तेज वायु
नभ संज्ञा शब्द परस अरु गंध ॥ रस और रूप और म
न बुधि चित्त अहंकार मति ग्रंथ ८ प्रान अपान व्यान
उदान और कहीयत प्रान समान ॥ तक्षक धनजय

पुत देवदत्त और पौंड्रक शंखहनुमान ८ राजस तामस
सात्विक तीनौं जीव ब्रह्म हरिथाम । अठाईस तत्व य
ह नारायण सो कवि सुरजी नाम ९ नाभी कमल ना
रायण की सो वेद गरभ अवतार ॥ नाभी कमलमें ब
ऊत ही भटक्यो तऊ न पायो पार ११ तब आज्ञा भई य
हरिकी तप करो परम तप आप ॥ तब ब्रह्मा तप कि

यो वर्षसत हूर भये सब पाप ९२ नव दर्शन दीनौं करुणा
कर परम धाम निज लोक ॥ ताको दर्शन देखि भयो अ
जसभ वातनि सोक ९३ जहा आदि निज लोक महा निधि
रमा सहस संजुत ॥ अंदोलन झूलत करुणा निधि रमा
सहित अति हूत ९४ अस्तुति करि विविधि नाना करि
परम प्रेम आनंद ॥ जैजैजै कहि गीत गायकै पढत

वै·रा· है नाना भेद १५ प्रजा करी नाथ चतुरानन करी सृष्टि
१०४ विस्तार ॥ होरी खेलन की विधि नीकी रचना रचो प्रप
104 च १६ चौदह लोक करौं नाना विधि रचि बैकुंठ पाताल ॥
नाना रचना रची विधाता होरी खेल रसाल १७ ॥ दश
हैं पुत्र भये ब्रह्मा के जिन सेच्यो संसार ॥ स्वायंभू मनु
प्रगट नव कीन्हे प्रकृत सत रूपा नार १८ भव की रक्षा कर ३

नज्ञ कारन धरि बराह अवतार ॥ पाछें कपिल रूप ह
रि धारयौ कीनौं सांख्य विचार २४ दीनौ ज्ञान आप मा
ता कौ कीन्हौं भवनिस्तार ॥ आठौ लोकपाल नव की
ये अपने अपने अधिकार २५ ते अगिनि जम नैरत बरु
न और सूरज चंद यह नाम ॥ मरुत कुबेर पसुपति करि
यत जहां शंकर कौ धाम २६ सत्यलोक जन लोक लोक

तप और महर निजलोक ॥ जहराजत ऋषराज महा
निधि निशिदिन रहत असोक २२ जननी आज्ञापाय
चले वनपाव वरष मझमार ॥ ताको आप कृपाहरि
कीनी यरि आये अवतार २३ पाछे पृथुको रूपहरि
लीन्हौ नानारस दुहिकाढै ॥ तापर रचना रचीविधा
ना बहुविधि जतन न वाढै २४ रवि नौखंड दीप साती

मिलि कीनो होरि समाज ॥ वन उपवन पुरवनवङ्ग

फूले सवै वसंत कोसाज २५ दानव देवलगे आपसमै

कीन्हौ युद्ध प्रकार ॥ विविध शस्त्र छूटत पिचकारी

चलत रुधिर की धार २६ दीनै मार असुर हरिने नव दे

वन दीनौं राज ॥ एकनकौ फगुवा रैद्रासन एक पता

ल की साज २७ विद्याधर गंधर्व अपसरा गान करत सव

वे.ग. राखे ॥ चारन सिद्ध पढन विरदावल लै फगुवा हाव
१०६ राखे २८ चंद्रलोक दीनौं शशिको तव फगुवा मैं हरि
106 आप ॥ सवन द्विजकौं राजा दीन्हौं शशिमंडल मैं आप
२९ मंगल बुद्ध शुक्र अरु शनि अरु राहु केतु ग्रह जानि·
रवि अरु शशि सब होनको फगुवा दीनौं चतुरसुजानि
३० अतल वितल अरु सुतल तलातल और महातल जान·

पाताल श्रौर रसातल मिल मानो भवन प्रमान ३१ संकर
धनको धामपर महाविनहो राजत निजवीर ॥ शेषनाग
ताकेनर ह्लारम वसत महा धनधीर ३२ ईलावर्त श्रौर
किंपुरुषा ऊरु श्रौर हरिवर्ष केतुमाल ॥ हिरनमैं र
मनक भद्रासन भरतखंड ब्रजपाल ३३ सातो दीप
कहे शुकमुनिने सोई करत प्रवसूर । जंबुसल्मकोंच

वे॰गा॰ साय करह ग्रह क्रपा प्रशाकर भर पूर ३४ अपनैं अपनैं स्थान
९८ घर तब फगुवा दियो चुकाय ॥ जब जब हरि मायानैं दान
107 व प्रगट भये है आप ३५ तब तब धरि अवतार कृस्न ने
कीनैं असुर संहार ॥ सो चौवीस रूप निज कहियत
बरनन करत विचार ३६ प्रथम किये स्वायंभू मनुरूप
अज आज्ञा यह दीनी ॥ भूपर जाय राजतम करिहो ए ६

हि विस्तार यह कीनो ३७ स्वायंभू मनु अरु सतरूपा न
रन भूमि पर आये ॥ जलमें मगन भये भुव देवै फिर
अजपै फिर आये ३८ अजसों आय कही सबही विधि भ
वइव देखियत नाही ॥ नव अति ध्यान कियो श्रीपति
को केशव भये सहाई ३९ आई छींक नाकतें प्रगटे सू
कर अति लघु रूप ॥ देखत गाजसे होय गये हैं कीन्हो घूर

के. रा.
१-८
104

न स्वरूप ४० जैजै करत सकल सुरनर मुनि जलमै कि
यो प्रवेश ॥ जाय पनाल वाट गहि लीनी घरनी रमा न
रेश ४१ नेभव कमल कुसुम की नाई वलै मनहु गजरा
ज ॥ कछुउर नाहिन जियमैं उपजत अति आनंद समा
ज ४२ जोग साधु सनकादिक चारी गये हरिके निजलो
क ॥ कीन्हें क्रोध मनेजव कीन्हे दियो श्राप अति सोक ४३

जै अरु विजय असुर योनिन को भये मीन अवतार ॥
तिनमें प्रथम लियो कश्यप गृह दिति की कोषि मझार
४४ प्रथम भयो हरनाछ महाबल जिन जीते लोकपा
ल ॥ नारदसीष गयो सूकर पै देखो रूप विकराल
४५ सहस वरष लौं जल में जूझे कियो दनुज संहार:
पाछे आय भूमि को थापी कियो यज्ञ विस्तार ॥ ४६

वे.गा. स्वायंभू मन रूपा तनयः कहियत तीन प्रमान ॥ आकू
१-५ ती देवहूती और परसूती वहुर सुजान ४७ परसूती दई
109 दक्ष प्रजापति तिन की सती सुयान ॥ सो दीनी महादे
व देवको अति आनन्द सुजान ४८ तज्यो देह अपमा
न पायकै वहुर दक्ष गृह जाई ॥ पातिव्रत धर्म जवजा
न्यो वहुरो रहइ विहाई ॥ ४९ ॥ आकूती दई रुचि प्रजा

पति भये यज्ञ अवतार ॥ इंद्रासन बैठे सुख विलसत दूर
किये भव भार ५० देवहूती कर्दम को दीनी तिन कीन्हो
तप भारी ॥ बिंदु सरोवर आये माधव किये गरुड असवा
री ५१ दियो वरदान सृष्टि करिबे को अस्तुति करी अमा
न ॥ मेरो अंस अवतार होयगो कहि भये अंतरध्यान ५२
पाछैं ऋषि निज तप मन लायो कीनो अपार विमान ॥

वे॰ग॰
११
110

तामैं वेद सकल जग देख्यो कम्पानौं सुखदान ॥ ५३

पाछै कपिल रूप हरि प्रगटे दरशान करि मुनि राय ॥

कीनौं त्याग गये वनको तव ब्रह्म परम पद पाय ५४

पाछै विविध ज्ञान जननी को दीनौं कपिल रूपाय ॥

सांख्य जोग अरु ज्ञान भक्त रूप वरनी विविध वनाय ५५

जलको रूप वरनवै याइ वहु [illegible] हरिकै रूप समाय ॥

चले मगन ह्वै अति ध्यान करि गंगा सागर न्हाय ५६
अजहूंलो राजत नीरधि कै तट करत सांख्य विस्तार ॥
सांख्यायन से बहुत महा मुनि सेवत चरन सुचार ५७
अत्रै पुत्र भये ब्रह्मा के तिन कीन्ही तपजाय ॥ आये तो
न देवता के ढिग ब्रह्मा शिव हरि राय ५८ तब उन सों
ग्यो सुत तुमहीं से तीनों प्रगटे आय ॥ अत्र भाषि प्रेम

रुद्र उरवासा दत्तात्रेय हरिराय ५८ अनसूया के गर्भ प्र
गट ह्वै कियो जोग आराधि ॥ यम अरु नेम प्रमान प्र
त्याहार धारन ध्यान समाधि ६० आसन कमल सिद्ध जो
ग कर प्रगट कला जगदीस ॥ दीनो भोग सहस नृप
को वड़ करुना निध जगदीस ६१ कीनै गुरु चौबीस
सीष लै यदुको दीनो ज्ञान ॥ पाते जलसै मुनि पद से

वन करत सदा प्रजध्यान ६२ जब सृष्टिन पर कृपा को
नी ज्ञान कला विस्तार ॥ सनक सनंदन और सनातन
चौथे सनत कुमार ६३ उनको कह्यो सृष्टि नाना विधरच
ना करो वनाय ॥ उन नहि मान्यो तब चतुरानन खी
जै कोप उपाय ६४ शंकर प्रगट भये भ्रकुटीते करी
सृष्टि निर्मान ॥ भूत प्रेत वैताल रचे बहु दौरे विधि कों

वै.रा.
११२

112

स्वान ६५ सुरनकरौं कह्यो चतुरानन सृष्टि महा उरव
दैन ॥ तब शंकर तपस्या कौनिकसै चिनै कमल द
लनैन ६६ सुरन त्रियाज भई धरम की तिनके हरि
अवतार ॥ नारायण भये प्रगट बद्रि तिन मैं सो अवधा
र ६७ सहस कवच एक असुर संहारेव बहुरि कियो त
प भारी ॥ सोच परेव सुरपति कौ तब उन पठई अप्स

रा नारी ६८ बहुन भांति उन कियो परम कुल नपमै
उनके काज ॥ कछु नहीं चली ब्रह्मा नारायण सव
समाधि निय लाज ६९ एक उरवसी हृदय उपजाइ दई
शक्र को नाय ॥ ताको देख देख जीवन है अजहू ईद सु
खपाय ७० स्वायंभू के इनिय प्रियव्रतान पाद मतिधीर
तिनके ध्रुव बालक जो जाये और उत्तम गंभीर ॥ ७१ ॥

नृपके पास गये गोदीमें वैठनको राजकुमार ॥ तब ल
घु मान कस्यो तब वैठे जब भेरे ध्रुवनाव ७२ सुन कटु
वचन गये मातापें तब उन ज्ञान दृढायो ॥ हरिकी
भक्तिकरौं सुखनीकै जो चाहो सुख पायो ७३ पांच
वरष के निवास चले तब मधुवन पहुंचे आय ॥ वि
च नारद मुनि तब बतायो जपै मंत्र चित लाय ॥ ७४

कछु दिन पत्र भक्ष करि बीते कछु दिन लीनो पानी ॥
कछु दिन पवन कियो अनु आसन रोक्यो स्वास षट जानी
७५ दारुन तप जब कियो राज सुत तब कांप्यो सुरलोक ॥
आहि आहि हरिसों सब भाष्यो दूर करौ सब शोक ॥७६
तब हरि कह्यो कोऊ जिन डरपो अबहि तुरत मैं जैहौं।
बालक अब बन करत दारुन तप ताहि तुरत फल दै

हो ७७ इतनी कहत गरुड पर चढिकै तुरतहि मधुव
न आये ॥ केतु कपोल परस बालककै बानी प्रगट क
राये ७८ अस्तुति करी बहुत ध्रुव सब बिध मन प्रसन्न
भय आप ॥ दिये राज भूमंडलकौं सब बिध थिरकरि
थाप ७९ हरि बैकुंठ सिधारे पुन ध्रुव आये अपने धाम॰
कीनौ राज नौसपट बरषन कीन्हे भक्तन काम ८० ॥

यत्त प्रबल गाफै ध्रुव मंडल तिन मारयो निज भ्रात ॥
तिनके काज अंश हरि प्रगटे ध्रुव जगत विख्यात ८१
बहुत बरषलौं राज कियो ध्रुव फिर आये निज लोक ॥
सबके ऊपर सदा विराजत ध्रुव सदा नीसोक ८२ सनका
दिक प्रह्लियो बनरा नन ब्रह्मजीवकौं बीच ॥ प्रगट हे
सु वपु धरयो जगत गरज्यौ पैनीर स्रमीव ८३ यह भव

वे॰ए
११५
मेंडल कौं रसकाप्यौ भांति भांति निज हाथ ॥
यहि प्रकार रूप कियो जग आनंद अखिल लोक कै ना
थ ॥४॥ प्रिय ब्रजवेश धरेव हरि निज वपु ऋषभ देव य
ह नाम ॥ कीन्हे काज सकल भक्तन को अंग अंग अ
भिराम ॥५॥ कीनों गर्व महा मघवा नैं वरषा वरषो ना
ह ॥ तव हरि आप मेघ है वरषे करी परम भाव ब्रजर

८६ ज्ञान उपदेश कियो पुत्रनको ब्रह्मावर्त मझार ·
पाछे करि सन्यास जयानमै विचरे परम उदार ८७
श्राद्धो सिद्ध भई सन्न्यास जब करीन ऐसो कार ॥ जै
जै जै श्रीऋषभ देव मुनि पर ब्रह्म अवतार ॥ ८८
ब्रह्म सभामैं कियौ यज्ञ जब करन वेद उच्चार ॥
प्रगट भये हयग्रीव महानिधि परं ब्रह्म अवतार ८९

वे·रा
१२६

116

चार वेद ले गयो शंखासुर जलमें रह्यो छिपाय ॥ य
वि हयग्रीव रूप हरि मारिव लीने वेद छुडाय ५० सत्य
व्रत राजा रघुवंसी प्रथम भये मनु वंस ॥ कीनो तप
बहु भांति परम तब प्रगट भये हरि अंस ५१ यवि
लघु रूप मीनको मोहन आये उनके पानि ॥ तब
उन जलमें डारिदिये फिर तब बोले हरिबानि ५२

जलके बीच शरिर जिनमो कोवडे मछ्छ डरलागा ॥ य
ह कहि बृहत रुप हरि धारेव सप्त अन के भागा ५३
सप्तवे दिवस होयगी परलय आवेगी एक नाव ॥ ता
मैं बैठ सप्त द्विज अरु तुम करो भजन ममभाव ५४ इ
तनो कहि हरि रुप देखत हीं भयेजो अंतर ध्यान ॥
साते दिवस भयो जब परलय तबकीन्हो नृपज्ञान ५५

वं. रा.
११८
117

सबहि अन्नको बीज लियो नृप और लिये द्विज साथ ॥
बैठे नाव ध्यान हरिको करि दरशन दीनों नाथ ९६
बासुकि नाग आय नहे ततछन बांधी दृढ़ कर नाव ॥
ब्रह्मज्ञान कह्यो सो सब हरि नाव विधान ९७ वड़
न काललौं विचरे जलमैं नव हरि भये सुशांति ॥
बीत्यो प्रलय विविध नानाकर सृष्टि रची वहु भांति ९८

यह हरि मछ रूप जब लीन्हों कियो चरित विस्तार ॥ जै
जै जै श्री मीन महा वपु जै जै जगत अधार ९९ छीर समु
द्र मथन कीनो निधि चौदह रतन निकार ॥ परबत
पीठ धरेव हरि नीके लियो कूर्म अवतार १०० हरिनक
शिप अति प्रबल दनुज है कीन्हों तप परचंड ॥ तब
उन वर दीन्हों चतुरानन कीन्हों अमर अखंड १०१ जब

तब गयो तबहिं मघवाने सबसेपति गहि लीन्हो ॥ ग
हे जब कब कामिनि राजा की तब नारद सिखदीन्ही ९२
याके गर्भ वसतहै हरिजन सुन सुरपति यह वात ॥
तब तज दई आशु लैआये निज आश्रम विख्यात ९३ ॥
तिन प्रतिज्ञान कथा हेमनसौं करत रहत मुनि राज ॥
सुनि प्रह्लाद प्रसन्न कोपिमें प्रति आनंद समाज ॥९४

तापाछे तप कियो असुर बहु फिर देख्यौ निज धाम ॥
तब नारद मुनि दई कथा चले आयो है गाम ९५ पाछें
लोक पाल सब जीते सुर पति दियो उठाय ॥ बरुन कु
वेर अगनि यम मारुत सब बस कियो तिगणमाय ९६
हाहाकार भयो सुर लोकन गये सबै अज पास ॥ तब
अज ध्यान कियो माधव को बानी भई अकास ॥ ९७

वै॰रा
११९
119

सकल लोक यह देत असुर दुख तऊन करो संचार ॥ जब
मेरे जनको दुख देहै छिनहिं में डारौं मार ९८ जब प्र
ह्लाद प्रगट याके गृह पांच वर्षके भयेहैं ॥ आदर बहु
कीन्हौ राजाने पठन विप्र गृह गयेहैं ९९ जब वह विप्र
पढ़ावै कछु कछु मनकै चित धरि राखै ॥ जब वह जा
य तबहिं सब छिन सों राम राम मुख भाखै ॥ १०० ॥ लरि

12

का औरु पढन शाला में तिनहि कवन उपदेस ।। हरि
को भजन करो सबही मिल और जगत सब लेस ।११
याहि विधि कर उपदेस सबनको किये भजन रसलीन॰
संडामर्क जो पढन लागयो नव यह उतर दीन ।१२ राम
कृस्न अवतार मनोहर भक्तनके हितकाज ।। सोई सार
जगत में कहियत सुनो देव द्विजराज ।१३ यही बात

वै॰रा॰
१२॰
120

जगतमैं नीकी सोई पढत हम आज ॥ जबही विप्र
कह्यो जो अक्षर सो पुत्र पढत विन काज ॥ ११४ तब
हि अक्षर प्रहलाद बुलाये लिये गोद भरि अंक ॥ क
ह्यो पुत्र तुम कहा पढो हो एकांत कह्यो निसंक ॥११५
श्रवण कीर्तन स्मरन पादरत अरचन वंदन दास ॥
साख्य और आत्मा नैवेदन प्रेम लक्षनाजास ११६

सुनो पिता हो यही पढोउं और बात नहि जानूं ॥ इन
नें और मोहि जो कहियत सो कबहूं नहिं मानूं ११७ ॥
दीनों पटक भूप धरनीप कह्यो विप्रसों खीझ ॥ रे मू
रख तें कहा पढायो कैसें देउ तोहि रीझ ११८ जो यह
मेरो वैरी कहियत ताको नाम पढायो ॥ देहु गिराय
याहि परवत तें तिनगन जीव करायो ११९

बे॰गा॰ १२१ खेलत दीनों डार सैलते भूपर घन जल भीतर डारो ॥

डार अग्नि मैं शस्त्रन मारो नाना भाँति प्रहारो १२० ॥

तऊ न घात भई अंगन की जहँ तहँ राम बचायो ॥

तब नृप आप शस्त्र कर गहि कै बहुत हि त्रास दिखायो

१२१ कहाँ है राम कृस्न वह तेरो यो कहि गरजन कीनो ॥

घट घट जल थल व्योम धरनि मैं व्यापक यह श्रुति ली

नी १२२ तवलै खङ्ग विभमे मारो भयो शब्द सुनि भारी·
प्रगट भये नरहरि वपु धरि हरि कट कट करि उच्चारी ।
१२३ पकर लियो छिन मांझ असुर बल डारो नखन
विदारी ॥ रुधिर पान करि आंत माल धरि जै जै शब्द
उच्चारी १२४ मारो दैत्य दुष्ट एक छिन मैं जे नरसिंह
वपुधारे ॥ प्रह्लाद दृष्टि करत सुरनर मुनि भये भक्त

वे॰रा॰ १२२

गरबवारे १२५ रमा निकट नहि आवन हरि के ऐसो व

पु हरि पायो ॥ अज सनकादि देव नारद मुनि जानन

रूप निहारो १२६ अपनी अपनी स्तुति करके सब

हिन यहै सुनायो ॥ गन्धरब अरु विद्याधर चारन

विमल यश गायो १२७ नव प्रह्लाद आय हरि पद

सो शीश नाय यह भाष्यो ॥ जै जै जै जगदीस जगत

चरनकमल अनुरागा १४ क्रिपाकरि दीन्हो करुना
निधि अटल भक्ति थिर राज ॥ अंतर ध्यान भये हरि
तहँते सफल भये सब काज १५ नारद रूप जगत उ
धारन विचरत लोकनमा ॥ करि उपदेश ज्ञान हरि
भक्तिहि अरु वैराग दृढाय १६ स्वायंभू मनु रूपा
दोऊ कहियत है अवतार ॥ जगको धर्म प्रचार किये

वै॰ग॰
१२४
124

भव भक्तकर्म आचार ॥२७॥ करुना कर जलनिधि ने

प्रगटे सुधा कलस लै हाथ ॥ आयु वेद विस्तारनका

रण सकल ब्रह्मंडके नाथ ॥२८॥ तजी दुष्ट वधे जो भव

पर लियो कूर्म अवतार ॥ परस राम ह्वै कै द्विज थापे

दूर कियो भवभार ॥२९॥ रघु कुल वंश वतंश चूड़ाम

नि प्रकट्यो नाम अवतार ॥ दशरथ के गृह जन्म लि

२३

यो हरि रूपरास सुकुमार १७० रावण कुंभकरन प्रस
राधिप वढ़े सकल जग माहें ॥ सवहिंन लोकपाल
उनजीते कोऊ वोव्यो नाहें १७१ सकल देव मिलजा
य पुकारे चतुरानन के पास ॥ ले शिव संग चले च
तुरानन छीर सिंधु सुखवास १७२ अस्तुति करि व
हु भांति जगाये तब जागे निज नाथ ॥ आज्ञा दई

जाय कपिंजलमें प्रगटे सब स्वर साथ १४३ तब ब्रह्मा
सबहिन सों भाष्यो सोई सब स्वर कीन्हो ॥ सातों द्वीप
जाय कपिंजलकमें आय जन्म स्वर लीन्हो १४४ अपने अं
श आप हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप । नारायण भ्रू
व भार हरो है अति आनंद स्वरूप १४५ वासुदेव यों कह
त वेदमें है दश अवतार ॥ शेष सहस मुख रटन

निरंतर नऊन पावत पार १४६ सहस्र वर्षलो ध्यान
कियो शिव राम चरित साखेसार । अव गाइन करि
कै सब देख्यो नऊन पायो पार १४७ विनी समाधि
सती नब सक्यो कहो परम गुरुईश ।। काको ध्यान
करत उर अंतर को सरण जगदीस १४८ नव शिवक
ल्यो राम ब्रह्मगोविंद परम रूपकमैरे । सहस्र वर्ष

लौं ध्यान करतहौं रामकृस्न स्यावकेरे ॥ १४९ तामे
राम समाधि करी अब मदन वषिलो वाम ॥ अति
आनंद मगन मेरो मन अंग अंग हरन काम १५०
दाया करि मोको यह कहिये अमर होउ जेहि भांति·
मोहि नारद मुनि तत्व बतायो तातें जिय अकुलाति
१५१ तब महदेव कृपा करिकै यह चरित्र कियो विस्ता

२ ॥ सो ब्रह्मांड पुराण व्यास मुनि कियो वदन उच्चार
१५२ मुनि वालमीक क्रिपा सातौं रिषि राम मंत्र फल
पायो । उलटो नाम जपत ब्रह्म दीन्यो सुन उपदेश क
रायो १५३ राम चरित वरनन के कारण वालमीक
अवतार । तीनौं लोक भये परि पूरण राम चरित सु
विस्तार १५४ शत कोटी रामायण कीनी नकुन लीनौं

वे.रा. पार ॥ कह्यो वसिष्ट मुनि रामचंद्र सो रामायण उछा
१२८ 127 व १५५ काग भुसुंड गरुड सो भाख्यो रामचरित्र अव
तार । सकल वेद अरु शास्त्र कह्यो है रामचंद्र जस
सार १५६ कछु संक्षेप सूर अब बरनत लघुमति दुर
बल वाल । यह रसना पावन के कारन मेंटन भव
जंजाल १५७ तीनो ब्रह्म संग लै प्रगटे पुरुषोत्तम श्री २६

राम। संकरषन प्रद्युम्न लछिमण भरत महासुख
धाम १५८ शत्रुघ्नहि अनरुद्ध कहीयत है चतुर व्यूह
निज रूप। रामचंद्र प्रगटे जब गृह मैं हरषे कोसल
भूप १५९ शुक्ल नक्षत्र नवमी जु परम दिन लगन
सुद्ध शुभ वार। प्रगट भये दशरथ गेह प्रान वल्ल
ह अवतार १६० अति फूले दशरथ मनहीं मनकौ

वे॰रा॰ १२८ 128

शल्या सुखपायो । सौमित्रा कैकइ मनआनंद यह सब
दिन सुतजायो ॥९१॥ गुरु वशिष्ट नारद मुनि ज्ञानी ज
न्मपत्रिका कीनी ॥ रामचंद्र विख्यात नामयह सु
रमुनि की सुधि लीनी ॥९२॥ देतदान नृपराज द्वि
जन को सुरभी हेमअपार । सब सुंदरि मिलि मं
गल गावत कंचन कलश उझार ॥९३॥ आये देव औ

र मुनिजन सब दे असीस सुख भारी । अपने अपने धा
म चले सब परम मोद अधिकारी ९४ मन वांछित
फल सबहिन पायो भयो सदन आनंद । बाल रूप कै
के दशरथ सुत करत केल स्वछंद ९५ घुटुरन चलत
कनक आंगन मैं कौसल्या छवि देखत ॥ नील नलि
न तन पीत झगुलिया घन दामिन दुति पावत ९६

कबहुंक माखन रोटी लेकै खेल करन पुन मांगत ।। स
खेवत जननी समझावत आयकै उठ पुन लागत १६७
कागभसुंड दरशको आये पांच वर्ष लो देखे । स्तुति
करी आप वर पायो जन्म सफल करि लेखे १६८ क्रिपा
करि निजधाम पठायो अपनो रूप दिखाय । वाके
आश्रम को उ बसत है माया लगत न ताय १६९ ।।

प्रातकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे बारे राम ॥
उठि बैठे देन बन लै आई करी म्यावरी स्याम ९०॥ चा
री भ्रात मिल करत कलेऊ मधु मेवा पकवान । जल
आचमन आरती करकै फिर कीन्हो असनान ९१॥
करत सृंगार चार भइया मिल सोभा बरनि न जाई ।
चित्र विचित्र सीस चौतनिया इंद्र धनक छवि छाई ९२॥

बे.रा.
१३०
130

अलकावलि मुक्तावलि गूंथी छोर सुदेश विराजै ॥
मनहुं सुरसरी धार सरसुती यमुना मध्य विराजै ७३
तिलक भालपर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ॥
मानो तीन लोककी शोभा अधिक उदय सो कीनो
१७४ खंजन नैन बीच नाशा पुट राजत यह अनुहार ॥
खंजन जुग मनो लरत लराई कीर बुझावत रार १७५

नाशाके वेसरमै मोती बरन बिराजत चार ॥ मनो
जीव शनि शुक्र एकह्वै बाढे रविके द्वार १७६ कुंडल
ललित कपोल बिराजत झलकत आभा गंड ॥ ऐसी
वर पर मनो देखियत रवि की किरन प्रचंड १७७ ॥
अरुण अधर दमकत दसनावलि चारु चिबुक मध्य
स्थान । अति अनुराग सुधाकर सींचत दाडिम बीज

वे· रा·
२३९
131

समान २८ कंठ सिरी बिच पदक बिराजत बड़मणि
मझाझार । दहिनावर्त देत भवनाभे सकल नखत
बड़वार २९ रतन जड़ित कंकन बाजूबंद नगन ख
ड़िका सोहे । डारडार मनु मदन बिटपनके विकच दे
ख मन मोहे ३० कटि किंकिणि रुनझुन सुनि तन
की हंस करत किलकारी ॥ नूपुर धुनि परा लालि प

३०

न्हैया उपमा कौन विचारी ॥८१॥ भूषन बसन आदि स
ब रघु रघ माता लाड़ लड़ावै । राम चंद्रकी देख माधुरी
दरपन देख दिखावै ॥८२॥ निज प्रति बिंब विलोक म
करमै हँसत राम सुखराम । तैसेई लछमन भरत श
त्रुहन खेलत डोलत पास ॥८३॥ दशरथ रायन्हाय
भोजनको बैठे अपने धाम । ल्यावो वेगि राम लछम

न को सुनि आये सुखधाम ॥ बैठे संग बाबाके बा
रो भैया जेवन लागे ॥ दशरथ राय आउ जेंवत है अ
ति आनंद अनुरागे । १८५ । लखु लखु ग्रास राम मुख
मेलत आउ पिता मुख मेलत । बालकेलि को विस
द परम सुख सुख समुद्र नृपझेलत १८६ दाल
भात हृत कढ़ी सलोनी अरु नाना पकवान ॥

आरोगत न्रप चारि सुत मिलि अति आनंद निधान
१८७ अचवन कर सुन जल अब लायो जब न्रप बीरा
लीनो । राम लखण अरु भरत शत्रुहन सबनहिन
अचवन कीनो १८८ बीरा खाय चले खेलन को मि
लिकै चारो बीर । सखा संग सब मिले बरा बर आ
ये सरजू तीर १८९ नीर चलावन सिख्य सिखावन

वे॰रा॰ यर निसान देखरावत ॥ कवहुंक साथ ग्रथवाढि
१३३ ग्रापुन नाना भांति नचावत १५ कवहुं वारम्मान
133 मिलि ग्रगिया जात परम सुखपावत । हरिन ग्रा
दि वहुजंत किये वध निज सुरलोक पठावत १६१
यहि विधि वन उपवन वहु क्रीडा करी राम सुखे
दाई । वालमीक मुनिकही कृपाकर कछुयक सुर
३३८

जोगाई १५२ भई सांझ जननी टेरत है कहां गये चा
रो भाई । भूख लगी है है लालन को लावो वेग बुला
ई १५३ इतने सांझ चार भइया मिल आये अपने धाम
सुखेंडुवन आरती उतारत कौसल्या अभिराम १५४
सौमित्रा कैकई सुखपावन वहु विध लाड लड़ावन
मधु मेवा पकवान मिठाई अपने हाथ जेवावन १५५

बे॰ रा॰ वारो आनन श्रमित जानिकै जननी नव पोछाये ॥
१३४ चांपत चरण जननि अप अपनी कछुक मधुर स्वरगा
137
ये १९६ आई नींद राम सुख पायो दिन को श्रम विस
रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने कंठ लगायो
१९७ मिस्वा मित्र बडे मुनि कहियत यज्ञ करत निज
धाम । मारिच औैर सुबाहु महासुर विघन करत ३२

दिन याम १९८ परब्रह्म अवतार जानकै आये नृपके पा
स ॥ दशरथ राय बहुत पूजा विधि किये प्रसन्न हुलास
१९९ भोजन कर जबहीं जु विराजे तब भाष्यो मुनिराय०
यज्ञ सुफल कीजे मेरो अब दीजे राम पदाय २०० तब
नृप कह्यो रामहै बालक मोको आज्ञा कीजै ॥ तब
द्विज कह्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै २०१ ॥

गुरुवसिष्ठ सब विध समझाये राम लषन संग दीन्हे ।
मारगमें अहिल्या उद्धारी नावक निज पद कीन्हें २-२
विश्वामित्र सिखाई बहुविधि विद्या धनुष प्रकार ॥
मारगमें ताड़का जुआई वदन पसार २-३ छिनमें राम
तुरत सों मारी नेक न लागी बार ॥ दीन्ही मुक्ति जानि
निज महिमा आये ऋषिके द्वार २-४ कीन्हे विप्रयज्ञ

परि सूरन असुर विघ्न को आये । अगिनवान कर दह
न कियो है एक समुद्र पठाये २०५ जनक विदेह कि
योज स्वयंबर बहु नृप विप्र बुलाये ॥ तोरन यन्त्रघ
देव त्र्यंबक की काहू जनन न पाये २०६ विश्वामित्र मु
नि वेग बुलाये सकल सिष्य लै संग ॥ राम लक्ष
ण संग लिये आपने चले प्रेम रस रंग २०७ जहं तहं

वै॰रा॰ उझक झरोखा झांकत जनक नगर की नार । चित
१३६ वति कृपाराम अव लोकत दीनौ सुखज अपार ३८
136 कियो सनमान विदेह नृपतिने उपवन बासो कीनौ॰
देखन राम चले निज पुरको सुख सवहिन को दीनौ
३९ सब पुर देखि धनुष पुन देख्यौ देखे महल सुरंग॰
अद्भुत नगर विदेह विलोकत सुख पायो सबअंग ४०

कहत नारि सब जनक नगर की विधि सो मोद पसा
र सीता जू को बर यह चहिये है जोरी सुकुमार २११
अपने धाम फिर नव दोऊ आये जान भई कछु सांझ
कर डंडवत परसि पद ऋषि के बैठे उपवन मांझ २१२
संध्या भई कृत्य निज कर कै कीनों ऋषि परनाम ॥
पौढे जाय चरन सेवा द्विज करके अति बिसराम २१३

बे॰ रा॰ ब्रह्म मुहूरत भयो सवेरो जागे दोऊ भाई ॥ कर परना
१३८ म देव गुरु द्विज को जल सुस्नान कराई २१४ आये
137 भूप देश देशन के जुरी सभा अति भारी । तहां बुला
ये सकल द्विजन को जनक सभा मंझारी २१५ कौ
शिक मुनि तहं ऋषिसों पधारे लिये शिष्य संगसान·
चले नित्य आन्हिक सब कर द्विज उर आनंद न समान ९
३६

दोनौं भ्रात संग मैं लीन्हें आये राज दुआर ॥ जहं बैठे
सब भूप आपसो गाढ्यो गरभ अपार २१७ अपने अप
ने भुजबल तोलत तोरन धनुष उदार । कछु नहि ब
लत खिसाने भये सब रहे बड़न पचिहार २१८ सीता
कहत सहेलिन सो पुनि यही करत रघुनंद । तब उ
न कह्यो सकल सुख सागर सोये परमानंद २१९ ॥

बे॰रा॰
१३८
138

बार बार जिय सोच करतहैं बिधि सों बचन उचारी ॥
मन क्रम बचन यहै बर दीजो मांगत गोद पसारी २२०
एक बार सुर देवी सुजन भयो दरस सखि मोह ॥ ता
दिनतें छिन कल न परतहै सत्य कहत हो तोह २२१
सब न्रप पचे धनुष नहि टूट्यो तव बिदेह दुख पायो ॥
क्रोध बचन करि सब सें बोले छत्री कोउ न रहायो २२२

३०

यह सुनि लछमण भये क्रोध युत विषम वचन यों बो
ले । सूरज वंश नृपनि भूतल पर जाके बल बिन तोले
२२३ कितक बान यह धनुष रुद्र को सकल विखकर
लैहौं । आज्ञा पाय देव रघुपति की छनक मांझ हठ
गेहौं २२४ सबके मन कों देख अंदेसो सीता आरत
जानी ।। रामचंद्र तबही अकुलाने लीन्हौं सारंग पा

वे॰ग॰
१३५

नी २२५ छिनमें करले केज चढायो देखत है सव भूप॰
डरिव नोर भ्रजान शब्द भयो जैसें काल को रूप २२६
सवही दिशा भई ध्वनि ग्रन्तर परशुराम सुनि पायो ॥
परश्न सम्हार सिष्य संगले के छिनही में तहें ग्रायो
२२७ जै जै कार भयो जगतीपर जनक राज ग्रति हरषे ।
सुरविमान सव कौतक भूले जै धुन सुमनन वाषे २२८

३८

जनकराज नव विप्र पठाये वेग वरात बुलाई ॥ द
शरथ राज वाजि गज लैकै सबही सौज बनाई २२९
खेलत चली वरात विपुल धन लै कै जोर सबज नहि
पार । शोभा सिंधु कहत नहि आवै वरनन करत उचा
र २३० गुरु वशिष्ट मुनि लगन दियो सुभ सुभ नछ
त्र सुभवार । आयेजात नृपति मनमाने कीन्ही अति

मनहार २३१ व्याह केल सुख बरनन कीन्हों मुनिवा
लमीक अपार । सो सुख सुर कह्यो वह कीरत जगत
करी विस्तार २३२ वेद शास्त्र मथ करी व्याह विधसो
ई कीन्ही नृपराय । राम लछन अरु भरत शत्रुहन
चार रुचिये विवाय २३३ होम हवन द्विज पूजा गन
पति सुरज शक्र महेश । दीनों दान बहुत विप्रन

को राजा मिथिल नरेश २३४ खेलत यहि विध ॥
उत सब भये परम आनंदकौं बहुत दायजो दीनौ ॥
भये विदा दशरथ नृप नृप सौं गवन अवध पर कीनौं
२३५ भृगुपति आय जानि जब रघुपति मिले धाय
शिरनाय। दशरथ राय विनय बहु कीन्हों जिय मैं
अति डरपाय २३६ खेलत यहि विध हरि होरी हैं ॥

वे॰रा॰ नवमुनि कह्यो यत्नवकौं नौरेव रुद्र परम गुरु मेरे ॥
१४१ रामचंद्र स्रवण अरु षोलन नेक नयन जब हेरे २३७
141 लीन्हों अंस खैंच भृगुपति कौं अपने रूप समायो ॥
कयो जाय तप शैल महेंद्र पै मुनि मनि वर शिर नायो
२३८ अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर सिंगार ।
कदली खंभ चौक मोतिन के बांधी वंदनवार २३९

80

किये प्रवेश राजभवननमें रामचंद्र सविलास ।। अ
द्भुत भवन विराजत रतनन सूरज कोटि प्रकास ४·
द्वादश बरष विराजे बालक फिर भुआर हरी । कैकेई
के वचन प्रमाण किये नृपतब यह काज करी २५।
वचन समुझ नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । राम
चंद्र पितु आज्ञा मानी जिय में वचन धरो ।। २४ ।।

वे॰रा॰
१४२
142

यह भूभार उतारन रघुपति वड्डत सुखिन सुख देन॰
वनीवास को चले सिया संग भ्रात लिये राजिव नैन
रथ्थ मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त पक ज्ञान
तहँते गये जु चित्रकूट को जहां मुनिन की स्थान ४४
वालमीक मुनि वसत निरंतर राममंत्र उच्चार । ता
कोफल यह आज भयो मोहि दरस दियो कुमार २४५

४९

पूजा करत्ति पथराय भवन मैं रामचंद्र परनाम । कि
यो विविध विध पूजा कर के ऋषि चरनन सिरनाम
२४६ बहुत दिवस लौ बसे जगत गुरु चित्रकूट निज
धाम ॥ किये सनाथ बहुत मुनि कुल को बहु वि
ध सुर काम ॥ भरत जान जिय मैं रघुपति को दुः
२४७
सह परम वियोग । आये धाय संग सब लेके पुर

वे॰रा॰ वासी नटह लोगा २४८ विन दशरथ सब चले नरनही को
१४३ सल पुरके वासी । आये रामचंद्र आवे देख्यो सबकी सि
113 हो उदासी २४९ रामचंद्र अनि सब जन देखे पिता न दे
खन पाये ॥ पूछी बात कह्यो सब काहू मन बहु विध
बिलखाये २५० वेदरीति करि रघुपति सब विधि स
रजादा अनुसार । बहुत भांति सब विध समझाये भ ४२

रत करी मनुहार २५१ गुरुवशिष्ट मुनि कह्यौ भरत सों
राम ब्रह्म अवतार । वनमैं जाय बहुत मुनि तारे हर
करै भुव भार २५२ पुन निज विश्व रूप जो अपनो सों
हरि जाय देखायो ॥ आज्ञा पाय चले निज पुरको अ
भहि मीत समझायो २५३ कछु दिन वसेज चित्र
कूटमै रामचंद्र सह भ्रात ॥ तहांते चले दंडका वन

वै॰रा॰ को सुख निधि सोबल गाजै २५४ मारग मैं बड़ मुनि
१४४ जन तारे ग्रह बिराध रिष मारे। बंदन कर सरभंगा
145 सहा मुनि अपने दोष निवारे २५५ दरशन दियो सु
तीक्षण गौतम पंचवटी पग धारे ॥ तहां उत सूर्पन
खा नारी करि बिन नाक उधारे २५६ यह सुनि खर
र प्रबल दल आये छिन मगाम संघारे। कीन्हे काज

सकल सुर मुनि के भव के भार उतारे २५७ मुनि अग
स्त आश्रम जगाये हरि बहु विधि पूजा कीन्ही ॥ दिव्य
वसन दीने जब मुनि ने फिर यह आज्ञा दीन्ही २५८
दश कंधर को वेग संहारो हरो भव भार ॥ लोपा
मुद्रा दिव्य वस्त्र लै दीने जनक कुमार २५९ सूर्पन
खा जब जाय पुकारी नाक कान ले हान ॥ रावन

वे॰रा॰ १४५ 145

क्रोध कियो मुनिभारी अधर फरक मुनि गात २६०
गयो मारीच आश्रम हित वही वाँने वहु समझायो॰
तब मारीच कह्यो दशकंधर विनती बहुत करायो
२६१ रामवेद अवतार कहत है मुनि नारद मुनि पास॰
प्रगट भये निश्चर मारन को मुनि वह भयो उदास॰
२६२ कर गहि खड़ग तोर वध करि हो मुनि मारिच

उर मार्‍यो ॥ रामचंद्र के हाथ मरेंगो परम पुरुष फ
ल जान्यो २६३ कपट कुरंग रूप धरि आयो सीता
विनती कीन्ही ॥ रामचंद्र कर सायक लैके मारन
की विधि कीन्ही २६४ मारीच धनुष बान ले ताको
लछमन नाम पुकारेउ । लछमन नाम स्रवनन
तहा आये औसर दुष्ट विचारेउ २६५ धरि के कपट

वे·रा· भेष भिक्षुक को दशकंधर तहां आयो । हरि लीन्हीं छिन
१७६ में माया करि आपने रथ बैठायो २६६ चल्यो भाज गोसाइ
176 जेनजैयां लेके हरि को भाग । इतने रामचंद्र तहां आये
परम पुरुष वड भाग २६७ जव माया सीता नहि देखी
जिय में भये उदास । पूछन लगे राम द्रुम गनसों वड
न वधी उ रवरास २६८ मारगमें जटायु खगदेख्यो वि ८५

कल भयो तन हीन । विनती करी रामैं तासो बहुत
लराई कीन २६९ जव तन तज्यौ गृध्र रघुपति तब ब
हुत करम विधकीनो २७० जामो सखा राय दशरथ
को अपनो निजगति दीनो २७० मारगामें कबंध रि
पु मारेव सुरपति काज सवारेव । पंपासर हरि
चरन पधारे जलको दोष निवारेव २७१ शिवरी परम

बे॰रा
१४७
147

भक्त रघुपति की बहुत दिनन की दासी । ताके फल
आरोगे रघुपति स्वन भक्त प्रकासी २७२ दीन मलि
निज पुर की ताको तब रघुपति चले आगे ।। सीता
सीता विलपत डोलत परम विरह सोंपागे २७३ ।।
खेलत यहि विध हरि होरी हे ।। रविनंदन जब मिले
रामको अरु भेटे हनुमान ।। अपनी बात कही उन ह ४६

रिस्रो बालि बडो बलवान २७४ सप्तताल बेधन हरि
कीन्हों बाली तिनकमें मारो ॥ दीनो राज राम रवि
नंदन सब विध काम सवारो २७५ सप्तदीपके कपि
दल आये जेरो सेन अति भारी । सीताकी सुध लेन
चले कपि ढूंढत विपिन मझारी २७६ जलनिध
तीर गये सब कपि मिल सुनि संपात कि बानी ॥

लंक वसत सीता विन वनमैं सब वानर यह जानी २५७
रामचरण कर सुमिरन मनमैं चले पवन सुत धाय०
राम प्रताप विघन सब मेटे पैठे नगर सुभाय २५८
धरि लघु रूप प्रवेश कियो कपि लंका नगर मझार०
राम भक्त निज जान विभीषन भेटे हरि येकबार २५९
तब वाने सब भेद बतायो देखी कपि सब लंक। राम

चरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निशोक
२८- जाय अशोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह ॥
कर दंडवत बहुत विनती कर राम मुद्रिका दीन्ह २८१
सब संदेस कह्यो कपि सिय प्रति सुनि हियमें धरि राख्यो-
राम संदेस कह्यो तब सीता जो दूजो सो भाख्यो २८२॥
लागी भूष चले उपवन में नाना विध फल खाये ॥

बे॰रा॰
१४९
149

विटप उखार उजार विपिनको सबहिनको दस साये
२८३ सुनि प्रकार निशिचर बहु धाये कूदि सबनि से
घारे ॥ इंद्रजीत बल निय जब आयो ब्रह्म अस्त्र उन
डारे २८४ तासों बंधे दशानन देखन चले पवन सु
न धीर ॥ रावन बहुत ज्ञान समझायौ कथ्य कथ्य क
ह्या गंभीर ॥ चले छुड़ाय छिनक में नवही जारदई

४८

सब लेक ॥ कढि चलै राज वनकौं जयकर ज्यौं मृग
राजनि सेक २८६ आये नीर समुद्र मिले कपि मिले
आय जहं राम ॥ सुनि सुनि कथा श्रवन सीताकी उ
लकिन अति अभिराम २८७ करि कपि कटक चले
लंका की छिनमें बांध्यो सेत ॥ उतर गये पहुंचे
लंकापै विजय ध्वजा संकेत २८८ पठये वालि ऊमा

र विनय कर समझाये बहुबार । विन नहि थरी काल
वस जान्यो फिर आये सुकुमार २२४ असरन सरन उदा
र कल्पतरु रामचंद्र रनधीर । विभ्राता जान्यो जवि
भीषन निसचर जटिल सरीरँ राख्यो सरन लंकेश कि
यो अनि जब निसचर सब मारे । मायाकरी बहुत नाना
विध सबको राम निवारे २२५ कुंभकरन अन इंद्रजीत

यह महा वली वलसार । छिनमैं लिये सोषसवनि व
हज्यौं हनी वली अपार २५२ कियो प्रसाद शोभना कर
कै राज विभीषणादीनौं । पुनि मंदोरि श्रवन आइ दै
अभयदान सब कीनौं २५३ समाधान सुरगन कोकर
कै अम्रत मेघ वरषायो । क्रपा द्रष्टि अवलोक कर
कै हन कपि कटक जिआयो २५४ निस्तार किये सकल

वै॰रा॰
१५९

सब माथव नौनै जिये न कोय ॥ निरभय कियो लंके
स विभीषण राम लषन नृप होय २२५ सीता मिली
बऊत सुख पायो धरो रूप निज मायो ॥ पुष्पक या
न बैठके नीके चले भवन सुख छायो २२६ चले पव
न सुत विप्र रूपधरि भवनहि देन बधाई ॥ जानि
हूत रघुपति को प्रभु दिन भवत मिले नवधाई २२७

सनत नगर सब हित सावमान्यो जह तहं न नै वलेथा
ई ॥ रामचंद्र सुनि मिले भरत सौं आनंद उरन समाई ९८
कियो प्रवेश अयोध्यामें नव घर घर वजत वधाई ॥ मं
गल कलश धराये द्वारे वंदन वार वंधाई २९९ राजभ
वन मैं राम पधारे गुरु वशिष्ट दरसायो ॥ शीस न
वाय वहुत पूजाकर सुरज वेस वफायो ३०० ॥

वै॰रा॰
१५२

समाधान सब हिन को कीन्हौं जो दरसन को आयो ॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा मिल मनमे सुख पायो ३-१
बैठे राम राज सिंहासन जगमें फिरी दुहाई ॥ निर्भय
राज रामको कहियत सुरनर मुनि सुख पाई ३-२
चार मूर्ति धरि दरसन आये चारवेद निजरूप अस्तु
ति करी बहुत नाना विध रीझे कौशिल्यासुत ३-३

शिव विरंच नारद सनकादिक सब स्मशान को आये ।
राम राज बैठे जब जाने सब हिन मन सुख पाये ३.४
लोकपाल अनही मन हरषे सब सुमनन बरषाये ॥
पुष्प विमान बैठ हरिआये लै कुबेर पहुंचाये ३.५ ॥
अति आनंद भयो अवनी पर राम राज सुखदास ॥
कृतयुग धर्म भये त्रेता में हरनखमा प्रकास ३.६ ॥

बै·रा·
१५३
153

अश्वमेध बहु यज्ञ किये पुनि पूजे द्विजन अपार ॥ हय
गज हेम धेनु पाटंबर दीन्हें दान उदार ३॰ चरित अने
क किये रघुनायक सब पुरी सुख दीनो ॥ जनक
सुता बहु लाड लड़ावत निपट निकट सुख कीनो ८
जोन बसंत बहुत द्रुम फूले जनक सुता अनुरागे ॥
प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खेलन लागे ३·५

५२

कबहुंक निकट देखि बरषा ऋतु झूलत संग ॥
हिंडोरे रमकत जमकत जनक सुता संग हाव भाव
बिन थोरे ३९ कबहुं कमल सरोवर उपबन जनक सु
ता संग लीने ॥ नानाजल विहार विहरत है संतजन
न सुखदीनें ४१ कबहुंक रतन महल चित्रसारी
सरद निसा उजियारी ॥ बैठे जनक सुता संग वि

वै॰ रा॰
१५४
154

लसत मधुर केलि मनुहारी ३९२ कवहूंक अगार अपना
ना विध लिय संजोय सुखकारी ॥ कवहूंक निरतन दे
व नटी लखि रीझत हैं सुखभारी ३९३ राम विहार क
ह्यो नाना विध वालमीक मुनि गायो ॥ वरनत चरि
त विस्तार कोटि सतन अपार नहि पायो ३९४ सुर सम
इकी बूंद भई यह कवि वरनन कहा करै है ॥ कहत

५३

चरित रघुनाथ सरस्वती वैरी मत ग्रन्थ सरिहै ३१५ अप
ने धाम पठाय दिये नव धर वासी सव लोग ॥ जैजै जै
श्रीराम कल्पतरु प्रगट अयोध्या भोग ३१६ दुष्टपति
जव वैठे अवधर धरि म्रग पतिको रूप ॥ छिनमै भुव
को भार उतारेव परसुराम द्विज भूप ३१७ व्यास रूप
ह्वै वेद विस्तारे कीन्हे प्रगट पुरान ॥ नाना वाका धर्म

वै॰गा॰
१५५
155

थापन को तिमिर हरन भव भारन ३१८ उह रूपक
लि धर्म प्रकाश्यो दया सबन की मूल ॥ हरकियो पा
खंड वाद हरि भगतन को अनुकूल ३१९ कलिके आ
दि श्रेत कृतत्रयाके है कलकी अवतार ॥ मारिम ले
छ धर्म फिर थाप्यो भयो जगत जयजय कार ३२० कर्म
वाद थापनकों प्रगटे ऋषि गर्भ अवतार ॥ ब्रह्मयापान

५८

दीन्हों सुरगनको भयो जग यश विस्तार ३२१ असुर
न को व्यामोह कियो हरिधरो मोहनीरूप ।। अमृत
पान कराय सुरनको कीन्हे चरित अनूप ३२२ तैसेंही
भव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आ
कर्ष कियो हरि मारि दैत्य अपार ३२३ गज अरुग्राह
लरेजल भीतर तब हरि सुमिरन कीन्हों ।। छोडगरु

वे॰ वा॰ १५६ 156

उ सुखधाम सांवरो भक्तन को सुख दीन्हो २२४ जब
बढ़ असुर बढि पृथिवीपर कियो अनर्थ विस्तार ॥
सत्यसेन प्रगटे विश्वंभर सत्य कियो है अपार २२५ ॥
निज वैकुंठ वसाय रमापति कियो रमा को हेत ॥
विनती सुनि कमला की केशव कीन्हो सुख संकेत
२२६ ब्रह्मचर्य थापन के कारण भयो विष्णु अवतार ॥

५५

जहं तहं मुनिवर निज मरियादा थापी प्रगट अपार
३२७ अजित रूपहै शैल धरो हरि जल निध मथवे का
ज ॥ सुर अरु असुर चकित भये देषत किये भक्त के
काज ३२८ जब बलि राजा गये देवपुर लीन्हौं स्वर्ग छु
डाय ॥ अदिती दुखित भई कश्यप सों विनती करी
सुनाय ३२९ तब कश्यप मुनि कह्यो पयो व्रत विधि सों

वे-रा- १५८
157

करी बनाय । ताकौ ह्वाव जन्म हरि लीन्हौं श्रीवाम
न सुखदाय ३३० भादौं श्रवण द्वादशी शुभ दिन थ
ये विप्र हरि रूप ॥ शिव विरंचि सनकादिक आये
वन्दनको सुखभूप ३३१ यज्ञउपवीत विधोक्त कि
यो विधि सब सुर भिक्षा दीनी ॥ वामन रूप बले
हरि द्विज बरबलिको मन सुख कीनी ३३२ देउ क

५६

मंडल हाथ विराजत ओर ओढे म्रगछाला ॥ यदि
वड्रूप चले वामनजू अंबुज नैन विशाला ३३३
सूरज कोटि प्रकाश अंगमें कटिमें खेला विराजे ॥
करी वेद धुनि रूप हरिपे मनहु महाघन गाजे ३३४
मुनि धाये नवहीं बलिराजा आय चरण सिर नायो॰
विनती करी वहुत सुखमानो आज भयो मन भायो ३३५

वे॰रा॰ १५८ 158

बलिये विप्र यज्ञ शालामें जहां द्विजवर सब राजै। आ

ये ब्रह्म सभामें वामन सूरज तेज विराजै ३३९ तब रू

प कह्यो कछु द्विज मांगो रतन भूमि मणि दान॥ ह

य गज हेम रतन पाटम्बर देहौं प्रगट प्रमान ३३० ॥

तब बोले वामन यह बानी सुन प्रह्लाद कुल भूप॥

वड़न प्रति ग्रह लेत विप्र जो जाय परत भवकूप ३३८

तीन पैड वसुधा हम पावै पवन ऊटी एककारन ॥
जब न्रप अब संकल्प कियो है लागो देह पसारन ३३९
एक पैंडमैं वसुधा नापी एक पैड सुरलोक ॥ एक पै
ड दीजै बलि राजा तव है हौ विनशोक ३४० तापे देह
हमारी द्विजवर सो संकल्पित कीन्हौ ॥ सुन प्रसन्न
वामन यों बोले तैं मोकूं वस कीन्हौ ३४१ सदा द्वार

बे·गा· मेरे ठाढो है दरशन देहौं मोहि ॥ माया काल कबहुं
१५९ नहि व्यापै सुमिरन करै जे मोहि ३४२ सुतल लोकमै
159 थिरकर थाप्यो जहं विभूति अति भारी । गहिकै बा
टा द्वारपर ठाढे वामन ब्रह्म मुरारी ३४३ स्वर्ग लो
क दीन्हौं सुरपति को पुनि थिर करकर थाप्यो । नि
गमनेति कहि रटत निरंतर देव शत्रु सब कांप्यो ३४४ ५८

वामन रूप ब्रह्म हरि प्रगटे जिनकों यश जगगावै ॥
शेष सहस मुख रटत निरंतर सूर पार किम पावै ३४५
पुन बलिराजहि स्वर्ग लोकमें थापैगे हरिराय । सावै
भौम अवतार धरैगे श्रीवामन सुखदाय ३४६ पुनि
विभ्र रूप एक हरि लैंगे सकल जगत कल्यान । कप
ट खंड पाखंड असुर कों थापि भक्त निदान ३४७ ॥

वे॰ना॰
८०
160

विषक मेन रूप हरि लैगे कीन्हो शिवको हेत ॥ अव
र मार सब नरन विडारे दीन्हे रुद्र निकेत ३४८ धर्मसे
न है धर्म वढायो भविको धारन कीनौं ॥ शेष रूप है
धरा सीस फिर सब जगको स्वरवदीनौं ३४९ अंतर
यामी पालन कारण निज स्वधर्म धरि रूप ॥ अन्न
दान दे सब जग पोष्यो किये काज स्वरूप ३५० ॥

५९

योग पंथ पातंजल भाष्यो सोउ छीन जब जान्यौ । यो
गेस्वर वपु धरि हरि प्रगटे योग समाध प्रमान्यौ ३५१ ॥
क्रिया पंथ करनि ने जो भाष्यो सो सब भ्रमर मिटायौ ॥
अहद भाव है कै हरि प्रगटे छिन मैं फिर प्रगटायौ ५२
यह अनेक अवतार कला के को करि सकै वखान ॥
सोई सूरदास ने वरने जो कहै व्यास प्रमान ॥ ३५३॥

वै॰रा॰ ऐसे कला अवतार श्याम के कवि पै कहत न आवै॰
२६१
161
जहें जहें भीर परत भक्तन को तहें तहें वपु धरि धावै
३५४ माया कला ईश वनराननन वनर्व्यूह धरि रूप॰
वायु वरुण अरु यम कुबेर शशि मनु अग्नि सुर
भूप ३५५ रवि शशि मनु मरीच सुर गुरु अरु वार
वेद वपु जान । जग कौ प्रगट करन परजापति व

गरे कला निधान ३५६ जोजो भूप भये भव मंडल
लोक पाल निजजान ॥ निज महिमा हरि प्रगट क
रीहै विधि के वचन प्रमान ३५७ सुर ग्रह प्रसर रची
हरि रचना सो जग प्रगट सब कीन्ही ॥ क्रीडा करी
बहुत नाना विधि नियम वात दृढ कीन्ही ३५८ ·य
हि विध होरी खेलत बहुत भांति सुख पायो ॥ यरि

वे॰गा॰
१६२
162

अवतार जगतमैं नाना भक्तन चरित दिखायो ३५५
अंश कला अवतार बहुत विधि राम कृष्ण अवतारी॰
सदा विहार करत बृजमंडल नन्दसदन सुखकारी
३६० नित्य अखंड अनूप अनागति अबगति अनन्त
अनेन ॥ जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊन पा
वत अेन ३६१ जब हरि लीला की सुधि कीन्ही प्रगट

करन विस्तार । श्रीवृषभान रूपहै प्रगटे पुनि ब्रज
राज उदार ३६२ विद्या अरु कही यरुमति सौंजा
की रूपउदार । सोरह कला चंदज्यों प्रगटे दोनों ति
मिर विदार ३६३ पुनवसुदेव देवकी कहियत पहि
ले हरि वर पायो ॥ इनका भाग्य आय हरि प्रगटे यदु
कुल नाम न साध्यो ३६४ आठेउह रोहनी आई शंख

वे॰ग॰ चक्र वपु धारी । कुंडल लसत किरीट महाछबि वपु
१६३ वसुदेव निहारी । अस्तुति करी बहुत नाना विध
रूप चतुर भुज देखौ । पीतांबर अरु श्याम जलद
वपु निरख सफल दिन लेखौ ३६६ तब हरि कह्यौ
जन्म तुम्हरे गरभ तीन बार हम लीन्हौ ॥ पृश्नीगर्भ
देव ब्राह्मण को कुसरूप वेग भीन्हौ ३६७ मांगो सक ६२

163

ल मनोरथ अपने मन वांछित फल पायौ ॥ शंख
चक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ ३६८
यह भव भार उतारन कारन हलधर को संग लायौ ॥
क्रीड़ा करी लोक पावन कर करीं भक्त मन भायौ ३६९
प्राकृत रूप धरो हरि छिनमैं शिशु ह्वै रोवन लागे ।
तब वसुदेव देवकी निरखन परम प्रेम रस पागे ३७०

बे-रा
१६४
164

तब देवकी दीनह्वै भाष्यो रुपको नाहि पताजै । अहो
वसुदेव जाव लै गोकुल कह्यो हमारो कीजै ॥३५१॥
तब लै हरि पलना पोढाये पीतांबर ज ओढायो । त
ब वसुदेव सीस धरि पलना भयो सबन मनभायो ३५२
गोकुल चले प्रेम आतुर है खुलगये कपट कपाट ।
सोये स्वान पहरू अरु सोये सबै मूक भई वोट ३५३

तब वसुदेव लियो कर पलना अपने शीश चढायो ।
रैन अंधेरी कछु नहि सूझत अटकर अटकर आयो ७४
शेष सहस्र फन ऊपर छाये उनकी वेद बतावैं । आगे
सिंह हुंकारत आवत निरभै बाट जनावैं ३७५ जमु
ना अति जल हर वहनैहे चरण कमल परसायो ॥
मारग दीन्ही रामसिंध जैां नन्द भवन चलिआयो ७६

बै॰ग॰ पहुंचे आय महर मंदिर मैं नेकन सेकाकीनी । बाल
२६५ क धरि लैकै सबदेवी सरत गवनको कीनी ॥ ७३ ॥
लै वसुदेव जरत घर आये काहू जिय नहि जाने । जब
वह रोवन लागी तब सब जाग परे अकुलाने ७४ बाल
क भयो कह्यो नृपसों जब दौरि कंस तब आयो । कर
गहू खड्ग कह्यो देवकि सों बालक कहे पहुचायो ७५

नव देवकी अधीन कह्यो यह मैं नहिं बालक जायो ॥
यह कन्या मोहि बकस वीर नकीजे मो मन भायो ७६
केस वंसको नास करत है कहा समझ बिसरायो ॥
मोको भई अनाहदवनी ताते डर नहि जानी ३७७ क
न्या मांगालई नव राजा नेक शोक नहि आनी ॥ पट
कत शिला गई आकासे केस प्रतीत न मानी ३७८।

भई आकाश बानी सुरदेवी केस यहो अब आई । तेरो
शत्रु प्रगटे वज्र व्रजमें काउ लख्यो नहि जाई ३७ ॥
जैसे मीन करत कल क्रीडा जलमें रहत समाई । त्यों
तव काल प्रगट एक कहतहे लषण सकत तेहि
कोई । ३८ श्रवनन ध्यान भई सुरदेवी केस प्रतीत जो
मानी । तब वसदेव देवकी के ग्रह केस गयो यह

जानी ३८१ हम अपराध देहकी मेरो लिख्यो न मेट्यो
जाई । मैं अपराध कियो सिसु मारे कर जोरे विलकाई ।
३८२ सुन गृह आय सेज पर सोयो नेकु नींद नहि आवैं ।
देश देश के दूत बुलायो सबहिन मतो सुनावैं ॥ ३८३
दीन हीन जो असुर वचन बलि करत सकल मुनि तै
सो । हूकन नहि तन भार उतारेव जलको मांखन जैसो

वे॰ पा॰
२८०

167

भयो भोर यशुमति गृह आनंद मंगल चार वधाई ॥ जा
गी महर पुत्र मुख देख्यो आनंद उर न समाई ३८५ जैसे
शशि प्रगटत प्राची दिशि सकल कला भरि पूर । यसु
मति कूख आय हरि प्रगटे असुर तिमिर कर दूर ३८६
नंदराय घर ढोटा जायो महर महा सुख पायो ॥ वि
प्र बुलाय वेद धुनि कीनी स्वस्ति वचन पढ़ायो ३८७ ॥

रागिनी बंगाली नाल ३ ॥ गजलशैर ॥ टुक हिरस
हवा को छोड मिया मत देस विदेस फिरे मारा ॥ क
जाक अजल्का लूटे है दिन रात वजा कर नकारा ॥ क्या
भैसा वधिया वेल सुतर क्या गोने पल्ला सिर भारा ॥
क्या गेहूं चावल मोठ मटर क्या आगाअ आका अंगारा ।
सब ठाट पडा रह जावेगा जव लाद चलेगा वनजारा १ ॥

बे॰ ना॰ गाहै तू लक्खी बनजारा ग्रौर खेप भी तेरी भारीहै ॥
२६८ ग्रय गाफिल तुझसे भी चढ़ता एक ग्रौर बड़ा ब्योपा
168 रीहै ॥ क्या शक्कर मिसरी कंद गिरी क्या सांभर मी
ठा खारीहै ॥ क्या दाख मुनक्का सोंठ मिरच क्या केस
र लौंग सुपारीहै २ तू बधिया लादे बैल भरे जो
पूरब पच्छिम जावेगा ॥ या सूद बढ़ा कर लावे

गा या छोटा बाबा पावेगा । बटमार अजलका रस्तेमें
जब भाला मार गिरावेगा । धनदौलत नाती पोता
क्या एक कुनबा काम न आवेगा ॥ ३ ॥ हर मंजिल
मैं अब साथ तेरे यह जितना डेरा डांडा है ॥ जरदाम
दिरम का भांडा है बंदूक सिपर और खांडा है ॥ जब
नाइक तनका निकल गया जो मुलकों हांडा है ॥

वे॰ग॰
२८५
169

फिर दोलाहै मैं भेडाहैने हलवा हैने मोडौहे ४ ॥
जब चलते चलते रस्तेमे यह गौन मेरीफल जावे
गी ॥ एक वधीया तेरी महीपर फिर चढ़ने वास
न आवेगी ॥ यह खेपजो लदने लादीहै सवहिस
सोमें वट जावेगी ॥ धीहन जवाई वेटा क्या वनजा
रा पास न आवेगी ॥ ५ ॥ कैंयो नाहक वोझ उ

ढा नाहै उन गौनै भारी भारीके । जब काल लुटेरा

आन पड़ा फिर हुनहै व्योपारीके । क्या साजजड़ाऊ ज

र जेवर क्या गोटे थानकीनारीके । क्या घोड़े जीन सु

न हरेके क्या हाथी लाला अमारीके ८ जो खेप भरे

न जानाहै यह खेप मियां मन जान अपनी । अबको

ई घड़ी पल साथतमै यह खेप बदनकीहै खपनी ॥

नावेने शाल दुशालौंके ॥ ८ ॥ कछु काम न आवे
गा तेरे यह लाल जमर्रद सीमो जर ॥ सब पूंजी बा
टमें विखरेगी जब आन बनेगी जोऊर ॥ क्या मस्त ने
द नकिए मुल्क मकान क्या चौकी कुरसी तखतछ
तर ॥ क्या मालखजाना मुल्क मकान दौलत
हशमत फौज लशकर ॥ ९ ॥ यह धूम धड़क्का सा

वे॰ग॰ १२१ थ लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल। एक भूमगा
पासन आवेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल ।।
वर बार अटारी चौपाये क्या खासा नैनसुख क्या म
ल मल ।। क्या बिल बनत कीये रेशम को क्या ला
ल पलंग का रंग महल ।। ९ ।। क्या डबन म
कान बनता है हैखिभ नैरे तनका पोला। है ऊंची

गाफ्री उठानाहै यहां गोर गाफेने मुह खोला ॥ क्यारे
नी खेन्द करन्द वहां का कोट झंगरा अममोला ॥
क्या उजैरें हला तोप किला काशी शादाम रोर गो
ला ॥ ११ ॥ अब काल फिरा कर चाबक को यह बै
ल वरन काहां केगा ॥ कोई नाज समेटेगा तेरा
कोई गोन सिंये ओर टांकेगा ॥ होफर अकेला जेगा

वे॰ग्र॰ १७२ 172

लमें तूबाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जंगलमें
जब आहनजीर एक भनगा आनन ओंकेगा १२ ॥
यह पैंट अजावहै दुनियांकी और क्या क्या जिनस उ
कटीहै ॥ यहां मालकीसीका मीठाहै और बीज कि
सिकी खहीहै ॥ ऊख्ख पकताहै ऊख्ख बनताहै प
क बान मिठाई पहीहै ॥ जब देखो हिबनो आखि

रको नेलहा भाउन भहीं है ॥ गल ओर बबूला आगाह
वा और कीचड पानी महीं है ॥ हम देखचुके ईस दु
नियाको सब धोखेकीय सीहीहै ॥ कोई नाजखे दीदे
हंस हंस कर कोई नाखेनगा उवन खाना है ॥ कोई क
पडे रंगेपहरा है कोई गदडी ओढ जाता है ॥ कोई
भाई बाप बाबा मामा कोई मानी हुन कहता है ॥

बे॰ रा॰ १२३ 123

जब देखा खूबतो आखिरकोमे रिस्ताहैने नानाहै
र गलशोर । कोई सेट महाजन लाखपती जेवजाज
कोई पम मारीहै ॥ यहा वाजा किसीका हूलकाहै
और खेप किसीकी भारीहै ॥ क्या जानेकोन खरी
देहै और किसने जिनस उतारीहै ॥ जब देखा
खूबतो आखिरको दलाल न कोई ब्योपारीहै १४

कोई झलके बैठे मसनंद पर कोई रोवे अपनी दौलत
को ॥ कोई बोले अपना मजसेलो और मेराहेसा मज
कोदो ॥ कोई लडनाहै कोई मरनाहै जगाडे हक और
नाहकको ॥ जब देख छुबतो आखिरको कबुले
ना एक न देना दो १५ रम्माल नजूमी आ मिलतेहै
और फाजिल मुला स्यानाहो ॥ कोई आमिल कामि

तदाना कोई मस्त सिद्धा दीवानाहै ॥ तावीज फलीता
फालफसंहु श्रौर जादु मंतर लाताहै । जब देखा खू
बतो आखिरको सब हीला मकर वहानाहै १६ । को
ई लोटे हुवे गलियोंमे तैयार किसीका खेराहै ।
नित कजीये झगडे रहेहै यह मेराहै यह तेराहै ॥
जब देखा खूबतो आखिर कोन मेराहै ॥ १७ ॥

कोई टोपी टोप बनाता है कोई चोगा फिरा अम्मामा है ॥
कोई साफ बरहना फिरता है ने पगाडी न पाजामा है ॥
कम खोध गाजी और गाफे का नित कजीया है ॥ जब
देखा खूब तो आखिर को ने पगाडी है ने जामा है १८
कोई बाल बढाए फिरता है कोई सिर को घोट मुडा
ता है । जब देखा खूब तो आखिर को सब छोड अकेला

वे॰रा॰ १७५ 175

जाताहै । १९ । कोई रोताहै कोई हसताहै कोई नाचे
है कोई गाताहै । कोई स्त्रीने झपटेले भागे कोई थोम
डर दिख लाताहै । कोई माल इकट्ठा करताहै कोई
कुंजी कुलफ लगाताहै । जब देखा तबतो आखिर सब
झगड़ा रहा जाताहै २० कोई वेवे भेरा सवाब ग्रफ ए
म कही हथ दही की फेरी है ॥ कोई पला सिर पर

लागाहै कोई लादेवै लम्हकेरीहै । कोई ऊगाडे अपनी जागाहै पर यह मेरीहै यह तेरीहै ॥ जब देखा छिवनो आखिर कोन तेरीहै नमेरीहै नतेरीहै २१ कहींवली टेकी हनीहै कहीं खोसीकड़वकी झलीहै ॥ कहीं वलनी ब्याज पिटारीहै कहिं बलहा वक्की झलीहै। तरकारी वैगन साग हरा गड़ गाड़ा गाजर मूलीहै ॥

बे॰ग॰
१७८
176

जब देखा हवनो आखिरको सब बिकरी देखनम्
लीहै २२ कहीं बान घटेरन टाट पराजी कहीं दमर
ख बमरखन कलाहै ॥ कहीं येक रुपयेका खुरदा
कहीं कौडी पैसा पेलाहै ॥ कहीं छुटना छाज पि
टारीहै कहीं बिकना खोट खरो लाहै ॥ जब देखा
हवनो आखिर कोने पीछी खोट न बराखाहै ॥ २३॥

कोइ शिकरा बाज उड़ाताहै कोई हाथमें रखके नचती
है ॥ शरबाज कोईले बैठाहै और दौड़ किसीने उलती
है ॥ हैनार किसीके हाथोंमें और नाचनी फिरत उन
लीहै ॥ जब देखा खूबनो आखिर कोनरे शमस न
न सनलीहै २४ अब किसका रंग बुरा कहिये और
किसका रूप भला कहिये । एक दमकी पैठ लगी

है यह अब्बोहम जा वरजा कहिये ॥ येमैरत माशादे
नखजीर अवजा कहिये रेजा कहिये । कछु वात
नहीवन आनेकी उप वाप भलाहै क्याकहिये । ग
लशोर वहुला आगहवा औरकी वड पानी महीहै ॥
हमदेखचुके इस दुनियांको सवथोखेकी सटीहै २५
वटमार अजल्का आपडेवा हक इस्को देखडरो वावा

अब शाकवद्दा ओ आखोंसे और आहू सरद भरो बाबा ॥
दिल हाथ उठा कर जीने सेबे बस मन मार मरो बाबा ॥
जब बापकी खातिर रोतेथे अब अपनी खातिर रो बा
बा ॥ तन सूखा कुबड़ी पीठ हुई घोड़े पर जीन धरो बा
बा २६ जब जीनेको नस हाबसनदी और मरने को
मरहू मान करो ॥ हैरान करो हर मान करो या पत्र

वे॰गा
१७८
178

करो या दान करो ॥ या पूरी लड़ बटवा ओया खा
सा हलवा नान करो ॥ कुछ लतफ नहीं अब जी
नेमें अब चलने का सामान करो ॥ २७ ॥ तन
सूपा ॥ दिल काटो अपना जीनेसे अब और गलेको
मत काटो ॥ अब बाट फनाकी इक चबखो और
छन किसीका मत काटो ॥ अन छोडो हिस्से ब

खेरेकी ग्रौर भाजी ग्रपनी तुम खोटो ॥ नाकेद बछेरे
कूद हुके ग्रब ग्रौर हुलनी मन खोटो २८ यह ग्रसब
हूत कूदा उछला ग्रब कोडा मारो जेर करो ॥ ग्रब मा
ल इकठा करतेथे ग्रब तनका ग्रपने फेर करो ॥ गा
फ टूटा लशकर भागा हुका ग्रब ज्ञानमैं तुम शान शे
र करो ॥ तुम सांझ लडाई हार हुके ग्रब भागनेमैं म

बे॰ गा॰ न देर करो ॥ २९ ॥ सिर कोपा चोटी वालङ्ग एमह
१२८ पीला पलकै श्रान झुकी ॥ कद टेढा कान झप वह
179 रे श्रौर श्रांखें भीत्रु पलाय गई ॥ खावनीदगाई श्रौरभू
ख छटी दिल खसड्ख्या श्रावाजनहीं ॥ जो होंनीथी
सोहो गुजरी श्रव चलनेमै क्रुछ देर नहीं ३॰ ॥ इस
पाव खिसट कर चलनेसे मत रस्तेकों हैरान करो ॥

और पोपले मुहसे रोटीको मत मल मलकर हलका
न करो ॥ अब आपडूप तुम पानीसे मत पानीका नु
कसान करो ॥ कुछ लाभ नही इस जीनेमो अब मरने
से परहेज न करो ॥ ३१ ॥ कपनाल ॥ ज्ञान मय
माते सोनरकै ये जिनको रहतहैं निस दिन खुमा
री ॥ ज्ञान मय पीवत भेहै खुमारी सरत अंतर खे

वै॰रा॰ ले लगी रहनारी ॥ अनेदवन मेरो सदा निसवा सव
९८ 80 नरक स्वर्ग भाग गये इक वारी ॥ कहत कवीर सु
नो भाई साधो गुरुकीनो प्रीत मोहे हरहूंसे प्यारी ३२
कवित ॥ ताल ॥ झूलफाक ॥ पहरे आई नव स
त अवरन अतही सुंदर त्या वहोत सियानी ॥ गो
रे वदन पर अलकां छूटी मानो चंदन ले पटानी ॥

म्टगासे नैना कोकिल वैना कटके हर गजवाल सुहा
नी ॥ याहे वहा उर येद्धव निरखत इंद्रलोककी अप
सर विसरानी ॥ ३३ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ खुड गाल
वोह प्यारे भौरंभे ग्रेंडना ॥ दीप वाकी जोत चटी वे
दडेका वांदना ॥ मोतनके हार सीतल फुरि आयो
ग्रेजना ॥ ३४ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ साडे नाल वो

वे॰मा॰ १८१

लीवै आमीवै वेंजेटे आखोपैंगामि आलोदी आगालि
आ ॥ हथ रहेंडि मोडे कारी कमरीया वाप असाडे दे
या पालिआ ॥ ३५ ॥ ख्याल ताल ३ ॥ मीयां राजावे
सोणा निन साडे आडोदा ॥ साडही गल मनदा नहि
आपना आपजनामदा ॥ कोई समझाओ कौ पेछप
मावेद दिखलामदा ॥ ३६ ॥ ख्याल । ताल ३ ॥

पे गल मैनू ने दसीवे मीयां मोरोदे आमनदी उगाही
मिउआ दैदा ॥ मै वेदन नेरा अजब पहरावा केनी डे
दे गल हसिवे मीआंदा ॥ ३७ ख्याल ताल १ महत
लागी देमीयां मैडी नेडे नाल नसी जाणदे नाही खो
न योवन प्यारा विरजया जीवे ईशक नसाडे नपठ
गी ॥ ३८ ॥ इतिशेरगजल ॥ ॥

ཅེ་ཀ་
༡༨༢

१८२
२२
१५०

मिछति सथा संवाय विवायरे। श्रेणांकेनदले
जरुनगामिह भुजेप लक्ष्मीलव क्रीतेदास इवो
प सेवित पदांभोजेजनः संभ्रमः ७१ सा ससाध्वस
सानंद गोविंदे लोल लोचना सिंजान मंजुमंजीरं
प्रविवेश निवेशनं ७२ अतिक्रम्यापांगं श्रवण
पथ पर्यंत गमन प्रयासे नैवाक्ष्णोस्तरल तरता

ष्यति नयोः । तदानीं राधायाः प्रियतम समालोक
समये पपात स्वेदाम्बु प्रसर यिव हर्षाश्रु निकरः
७३ भजन्त्यास्तल्पान्ते कृत कपट कण्डूति पिहित
स्मिते याते गेहाद्बहिरव हितालीपरिजने । प्रियास्यं
पश्यन्त्याः स्मर शर समाकूत सुभगं सलज्जाया ल
ज्जा व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकारवि
भंगं । जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुं
ग तरंगं । हरि मेकर संचिर मभि लषित विलासं ।
सा ददर्श गुरु हर्ष वशं वद वदन मनंग निवासं । हा
रममल तरतार मुरसि दधतं परिलंब्य विदूरं । स्फु
टतर फेन कदंब करंबित मिव यमुना जल पूरं ॥ २॥

ग·म·
गी·

श्यामल मृदुल कलेवर मंडल मधिगत गौर दुकूले
नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भर वलयितमू
ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदनजनित र
तिरागे। स्फुट कमलोदर खेलित खंजन युगमिव
शरदि तडागे ४ वदनकमल परिशीलन मिलित
मिहिर सम कुंडल शोभे। स्मित रुचि कुसुम समु

५०
म·
५०

लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ५ शशिकिर
णछुरितोदरजलधरसुंदरसकुसुमकेशं तिमिरो
दितविधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशं ६
विपुलपुलकभरदंतुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरं
मणिगणकिरणसमूहसमुज्वलभूषणसुभग
शरीरं ७ श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृत

गी॰ म॰ मी॰

भूषण भारे। प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सु
कृतोदय सारे ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खी वृंदे मंदत्रपाभर निर्भर स्मर पर वशाकूतस्फुरित
स्मितस्नापिताधराम्। सरस मलसं दृष्ट्वा हृष्ट्वा मुहु
र्नव पल्लव प्रसव शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः
प्रियां ॥ किशलय शयने तले कुरु कामिनि चरण

कमल विनिवेशं । तवपद पल्लव वैरपरा भव मिद
मनुभवतुसुवेशं १ क्षणमधुना नारायणमनुग
तमनुसर राधिके । ध्रु- । करकमलेन करोमि चरण
महमागमितासि विदूरं । क्षणमुपकुरु शयनो
परमामिव नूपुर मनुगतिशूरं २ वदन सुधानिधि
गलित ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं । विरह

रा·म·
गी·

स्मितवापनयामि पयोधरतोयक सरसिरुहल ॥३॥
प्रियपतिं रमणा रभसवलितमिव पुलकितमतिदु
रवापम्। मधुरस्मितजव कलशे विनिवेशय शोषय
मनसिज तापम् ४ अधर सुधारस मुपनय भामि
नि जीवय मृत मिव दासम्। त्वयि विनिहित मनसे
विरहानल दग्ध वपुष मविलासम् ५ शशिमुखि

५४ म
५२

मुखरय मणि रशना गुण मनु गुण कंठ निनादम
श्रुति युगले पिकरुत विकले मम शमय चिरादव सादं ६
मामति विफल रुषा विफली कृत मव लोकित मम
धुनेदं । मीलति लज्जित मिव नयनं तव विरम वि
सृज रति खेदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिदमनुपदनि
गदित मधुरिपु मोदम् । जनयतु रसिक जनेषु म

गी·गो·
गो

नोरम रति रस भाव विनोदम् । द ।। अष्टपदी ।। श्लो
क ।। प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण
च क्रीडाकूत विलोकिते धरसुधा पाने कथानर्म
भिः आनंदाधिगमेन मन्मथ कला युद्धेपि यस्मिन्न
भूद् उद्भूतः स तयोर्बभूव सुरता रंभः प्रियं भावुकः
३६ मीलद्दृष्टि मिलत्कपोल पुलकं सीत्कार धाराव

म
५३

शारद्यकाकुलकेलिकाकुविकसद्हेता कृयो नाथ
रे स्वसोत्काम्य पयोधरे भरपरिष्वंगान कुरंगीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्त निःसहतनोर्धन्यो धयत्यानने ७८
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः ह
स्तेनानमितः कचेधरमधुस्यन्देन संमोहितः का

गी॰ म॰
गी

नः कामपि रतिमापन्न दृष्टो कामस्य वामा गतिः १८
वामांके रतिकेलि संकुलरणारंभे तया साहस प्राये
कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमान्निस्पंदा ज।
घनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लि रुत्कंपितं वक्षो मी
लितं मक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति १९। ते
स्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ

53 म ५८

स्वनिर्धौतो धरशोणिमा विलुलिता स्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः
कांचीदाम दरश्लथांचलमिति प्रातर्निखातैर्दृशोरेभिः
कामशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्मनः कीलितम् ८० अथ
कांते रतिश्रांतमपि मंडने वांछया निजगाद निराबा
धा राधा स्वाधीनभर्तृका ८१ इति मनसा निगदंतं
सुरतांते सा नितांत खिन्नांगी राधा जगाद सादरमि

रा·म·
गी·

द मानंदेन गोविंदे २३ अष्टपदी॥ कुरु यदु नंदन चंद
न शिशिर तरेण करेण पयोधरे। मृग मद पत्र कम
त्र मनो भव मंगल कलश सहोदरे १ निजगाद साय
दु नंदने क्रीडति हृदया नंदने। दयर चुंबन लंबित क
जल मज्वलय प्रियलोचने अलि कुल गंजन मंजन के
रति नायक सायके २ नयन कुरंग तरंग विकाशिनि

वासकरे श्रुति मंडले । मनसिज पाश विलास करे शु

भवेष निवेशय कुंडले ३ भ्रमर चयं रचयंत मपरि रुचि

रं सुचिरं मम सन्मुखे जित कमले विमले परिकल्प

य नर्म जनक मलकं मुखे ४ मृगमद रसललिते

ललिते कुरु तिलकमलिक रजनीकरे । विहित

कलंक कलं कमलानन विश्रमित श्रम शीकरे ५

ग॰म॰ गी॰

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसजधजचामरे ॥

रति गलिते ललिते कुसुमानि शिखंडि शिखंड कडा

मरे ६ सरसघने जघने ममशंबरदारणकंदरे । मणि

रशना वसनाभरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ॥७॥

श्रीजयदेव वचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मंडने ॥

हरिचरणस्मरणामृतकृतकलि कलुषज्वर खंडने प

श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो
र्घटय जघने काञ्ची मंच स्रजा कवरीभरं ॥ कलय व
लय श्रेणी पाणौ पदे कुरु नूपुरा विति निगदितः प्री
तः पीताम्बरोपि तथाकरोत् २४ प्रातर्नील निचोलम
च्युत मुरः संवीत पीनांशुके राधायाश्चकिते विलो
क्य हसति स्वैरं सखी मंडले ॥ व्रीडाचंचल मंचलं न

गी॰ म॰
गी॰

यनयो राधाय राधानने स्वैरं स्मेर मुखांबुजोस्तु जग
दानंदाय नंदात्मजः ८४ पर्यंकीकृत नाग नायक
फणा श्रेणी मणीनां गणे संक्रान्त प्रति बिंब संवल
नया विभ्रद्विभु प्रक्रियाम् । पादांभोरुह धारि वारि
धि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः । कायव्यूह मिवाचरं
नुपचिती भूतो हरिः पातु वः ८५ त्रियक्कंठ विलो

57 म ५७

लमौलिनरलोभे स्मरवेशोहर । जीतिस्थानकमा व
थान ललना लक्षेणा मेलयितः प्रेमणा कन्दलितः
स्मरमय मधुरे गाथा भावैर्दै स्वथा । सारेवो मधुसू
दनस्य दरस्मे रेमे कटाक्षोर्मयः ।८०॥ अष्टपदी ॥
संचर दधर सुधा मधुरध्वनि मुखरित मोहन वंशं ।
चलित दृगं चल चंचल मौलि कपोल विलोलवतंसं १

ग·स·
गी·

रासे हरि मिह विहित विलासं। स्मरति मनो मम कृ
त परिहासं चेन्द्रक चारु मयूर शिखण्डक मण्डल व
लयित केशं। प्रचुर पुरन्दर धनुरनु रंजित मेदुर मु
दिर सुवेशं २ गोप कदंब नितंब वती मुख चुंबन
लंभित लोभं। बंधुजीव मधुराधर पल्लव मुल्लसि
त स्मित शोभं ३ विपुल पुलक भुजपल्लव वलयि

म। ५८

न वंलव श्रवति मदने । करचरणो रसि मणिग
ण भूषण किरण विभिन्न तमिस्रे ४ जलद पट
ल वल दिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाटे । पीन प
यो धर परिसर मर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणि
मय मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारे । पीत
वसन मनुगत मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारे ६

ग·म·
गी·

विशदकदंबतले मिलितं कलिकलुषभयं शम
यंतं। मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा मनसा
रमयंतं ७ श्रीजयदेवभणितमतिसुंदरमोहन
मधुरिपुरूपं। हरिचरणस्मरणं प्रति संप्रति पु
ण्यवतामनुरूपं।८॥ श्लोक॥ हस्तस्रस्त
विलासवंशमनृजु भ्रूवल्लिमद्बल्लवीवृंदोत्सा

59

रिटंगेन वीतिने भतिस्वेदाद्री गंडस्थले । मामहो
दृ विलजिन क्मिन हथा मगयानने कानने । गो
विंदं व्रज संदरी गणवृतं पश्यामि हृष्यामि च दद
श्रेत मौरहन मौलि हृगीन वल न्मंदार विसंहसनः स्त
व्याकर्षण दृष्टि हर्षण महा मंत्रे ऊरंगीदृशो । दृ
प्यद्दानव दूय मान दिविषड्वीरङ्गःखापदं ॥

ग·म· ख्येमः कंसरिपो व्यपोहयतु वो श्रेयांसि वंशीरवः

गी· ८९ यद्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानंच यद्वैष्णवं

यच्छृंगारविवेकतत्वमपि यत्काव्येषु लीलायितं

तत्सर्वं जयदेवपंडितकवेः कृष्णैकतानात्मनः सा

नंदाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः

९० साध्वी माध्वीक चिंता न भवति भवतः शर्करे क

कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वा ममृतं मृत मसि क्षीर नी
रं रसस्ते। माकंद क्रंद कांता धर धरणितले गच्छ
यच्छंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जयदेवस्य
विष्वग्वचांसि ॥१॥ श्री भोज देव प्रभवस्य रामादेवी
सुत श्री जयदेवस्य। पराशरादि प्रियवर्ग कंठे
श्री गीत गोविंद कवित्वमस्तु। जय श्री विमले

रा॰मं
गी॰

मिहित इव मेराव कमलैः स्वयं सिंहेरा दिपिरणा
मदा मद्रित इव। भजापीड कीडा हत कवलया
पीडकरिणः। प्रकीर्णा सृग्बिंड जयति भज दं
डो मरजितः ५३॥ इति राग मध गीत गोविं
द पतिकेः समापनम॥ शुभंमस्यात्॥

म
६१

61

र्कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति केत्वा ममृतं मृत मसि क्षीर
नीरं रसस्ते । माकंद क्रंद कांता धर धरणितले ग
च्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जय दे
वस्य विष्वग्वचांसि ॥ श्री भोज देव प्रभवस्य रा
मा देवी सुत श्री जय देवस्य । परा शरादि प्रियव
र्गि कंठे श्री गीत गोविंद कवित्वमस्तु । जय श्री

ग·दे·
गी·

विभ्यैते मिहित इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण दि
पिरणमुदा मुद्रित इव । भुजापीड क्रीडाहत कुव
लया पीड करिणः । प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुज
दंडो मुरजितः ९३ ॥ इति गग देव शाक्स्य गी
त गोविंद परिच्छेदः समापनम् ॥

62